जहदे-मुसलसल

अल-मसीह की पैरवी

जहदे-मुसलसल

अल-मसीह की पैरवी

एम. नेलर

jahd-e-musalsal. almasīh kī pairawī

(Pressing On. Living as a Disciple of al-Masih)

by M. Naylor
transl. by G.M. Ansari
(Urdu–Hindi script)

© 2017 3rd edition M. Adabi Anjuman
published and printed by
Good Word, New Delhi

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्ते-मज़ामीन

1	आप कौन हैं? आपकी नई ज़िंदगी	3
2	आप कौन हैं? आप में रूहुल-क़ुद्स	8
3	अल्लाह से आपका रिश्ता : दुआ	13
4	अल्लाह से आपका रिश्ता : कलाम का मुतालआ	19
5	ईमानदारों से आपका रिश्ता : रिफ़ाक़त	25
6	ग़ैरईमानदारों से आपका ताल्लुक़ : तबलीग़	30
7	दुनिया के साथ आपका ताल्लुक़ : आला अख़लाक़ी मेयार	35
8	गुनाहों की माफ़ी	41
9	नेक आमाल : सवाब	46
10	फ़रमाँबरदारी और अल्लाह की मरज़ी : मसीह की हुक्मरानी	52
11	आज़ादी और रज़ाए-इलाही	58
12	रोज़ा, ख़ैरात और हज	64
13	दुख और हमारी ज़िंदा उम्मीद	70
14	ज़मीमा 1: ईसा मसीह का पैरोकार बनने का रास्ता	75
15	ज़मीमा 2: मसीही और मसिहियत	78

सदहाए-मुबारकबाद कि आपको ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह से नई ज़िंदगी का तोह्फ़ा इनायत हुआ है। आपने ईसा मसीह के पैरोकार बनने के पहले अक़दाम उठाए हैं, और अब आप मालूम करना चाहते हैं कि यह नई ज़िंदगी कैसे गुज़ारें (यह पहले अक़दाम ज़मीमा नंबर 1 में दर्ज हैं)।

यह किताब दो तरह से इस्तेमाल की जा सकती है। एक तो आप शुरू से लेकर आख़िर तक इसका मुतालआ कर सकते हैं ताकि नई ज़िंदगी में मदद हासिल हो। या फिर जब कभी आपको किसी मज़मून पर हिदायत की ज़रूरत हो तो आप इस किताब को बतौरे-किताबे-इक़्तिबास भी इस्तेमाल कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर पहले सबक़ में इस पर ज़ोर दिया जाता है कि हमें दुआ करनी चाहिए। लेकिन मसीह के पैरोकार को दुआ कैसे करनी चाहिए? तीसरा सबक़ इसका जवाब देता है कि दुआ क्या है। चुनाँचे अगर आपको दुआ की फ़िकर है तो पहले तीसरे सबक़ का मुलाहज़ा फ़रमाएँ।

किताबे-मुक़द्दस तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर, सहायफ़े-अंबिया और इंजील पर मुश्तमिल है। अगले सफ़हों में दर्ज हवालजात सब किताबे-मुक़द्दस से निकाले गए हैं। अगर आपके पास किताबे-मुक़द्दस हो तो बेहतर है कि आप उसमें हर एक आयत को तलाश करके उससे पहले और बाद की आयात भी पढ़ें। तब आपको हवालजात को समझने में मज़ीद मदद मिलेगी।

हवालजात किस तरह मालूम हो सकते हैं? मसलन यूहन्ना 3:16 से मुराद यूहन्ना की किताब में तीसरे बाब की आयत 16 है।

अगर आप सवालात पूछना चाहें तो हमें लिखने से हरगिज़ न हिचकिचाएँ। अगर कोई दूसरी बात आपकी समझ में न आए तो हम आपकी मदद करने के लिए हाज़िर हैं।

ईसा मसीह में नई ज़िंदगी की बुनियाद मुहब्बत है, और मुहब्बत ही हमें ईसा मसीह की पैरवी करने पर उभारती है। मुहब्बत पर मबनी यह ज़िंदगी गुज़ारने के लिए हर सबक़ में आपको हौसलाअफ़ज़ा मशवरे दिए गए हैं।

ईसा फ़रमाते हैं,

> ‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ (मत्ती 22:37-39)

किताब का मुतालआ करने में अल्लाह आपको बरकत अता फ़रमाए। आमीन।

1

आप कौन हैं? आपकी नई ज़िंदगी

ईसा मसीह के ज़रीए आपका ख़ुदा से ताल्लुक़ बदल गया है और नतीजतन आपकी हैसियत भी बदल गई है।

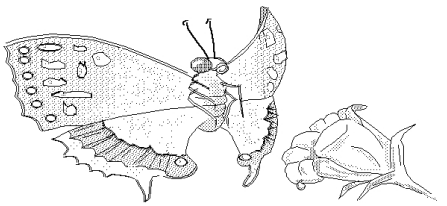

क्या आपने कभी छोटी-सी तितली को अपने ख़ोल में से निकलते, अपने परों को धूप में सुखाने के लिए फैलाते और फिर उड़ जाते हुए देखा है? अगर हाँ, तो फिर आप अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत के बेशुमार शवाहिद में से एक के गवाह हैं। जो कीड़ा पत्तों पर आहिस्ता आहिस्ता रेंगते हुए अपनी ज़िंदगी गुज़ारता था वह मोजिज़ाना तौर पर एक ख़ूबसूरत मख़लूक़ में तबदील हो गया है जो आसमान की तरफ़ परवाज़ कर सकता है। जब आप ईसा मसीह पर ईमान लाए तो आप भी तितली की तरह बदल गए। आपके अंदर तबदीलियाँ आ गई हैं। ऐसी तबदीलियाँ जो जोशो-वलवला दिलाती हैं, जो आपको ख़ुशी से मामूर करके ऐसे चाल-चलन की लियाक़त बख़्शती हैं जो अल्लाह को पसंद है। यह किस क़िस्म की तबदीलियाँ हैं?

आप नई मख़लूक़ बन गए हैं।

> चुनाँचे जो मसीह में है वह नया मख़लूक़ है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। (2 कुरिंथियों 5:17)

ख़ुदावंद ईसा ख़ुद फ़रमाते हैं कि जब कोई ईमान लाए तो यह नए सिरे से पैदा होने से मुताबिक़त रखता है (यूहन्ना 3:3)। तितली की तरह आप नई मख़लूक़ बन गए हैं। तितली की तरह आपकी पूरी ज़िंदगी का मतलब और मक़सद बदल गया है। चूँकि अल्लाह के साथ आपका ताल्लुक़ बदल गया है, इसलिए आपकी पूरी ज़िंदगी बदल गई है।

आप अल्लाह के फ़रज़ंद बन गए हैं।

> तो भी कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया। (यूहन्ना 1:12)

ईमान लाने पर हम ईसा मसीह की मौत में उसके साथ पैवस्त हो गए हैं। और मौत में उसके साथ पैवस्त हो जाने से हम अपने गुनाहों से आज़ाद हो गए हैं (रोमियों 6:5 ओ-माबाद)। इसलिए अब आपका ख़ुदा के साथ नया ताल्लुक़ है। आपकी शनाख़्त तबदील हो गई है। अब आपको नया रूहानी शनाख़्ती कार्ड दिया गया है। अब आपकी शनाख़्त यह नहीं है कि आप गुनाहगार हैं बल्कि यह कि आप अल्लाह के पाक फ़रज़ंद हैं।

अल्लाह के नज़दीक आपको रास्तबाज़ क़रार दिया गया है।

> मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाए। (2 कुरिंथियों 5:21)

अल्लाह ने मुक़र्रर किया है कि आपकी शनाख़्त ईसा मसीह से पैवस्त हो। इसी लिए उसकी रास्तबाज़ी आप में ज़ाहिर हो जाएगी। अल्लाह ने आपको मुक़द्दस होने के लिए बुला लिया है (1 कुरिंथियों 1:2)।

जिन गुनाहों और बुराइयों ने आपको अल्लाह से अलग कर रखा था वह सब ख़ुदावंद ईसा मसीह की क़ुरबानी के ज़रीए आपसे दूर कर दी गई हैं और आपको धोकर साफ़ कर दिया गया है। अब आप ख़ुदा की नज़र में रास्तबाज़ हैं।

मुझे क्या करना चाहिए?

जब अल्लाह अपने कलाम से हमें कुछ सिखाए तो हमें पूछना चाहिए कि "अब मैं क्या करूँ?" जो कुछ आपने मसीह में अपनी नई ज़िंदगी के बारे में सीखा है उसके जवाब में आपको क्या करना चाहिए?

- ख़ुदा का शुक्र करें जिसने अपनी बेहद मुहब्बत के बाइस आपको गुनाह से पाक-साफ़ करके आपको एक नई मख़लूक़ बना दिया है।
- गुनाह से दूर रहें, क्योंकि यों ही आप ज़ाहिर करेंगे कि आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और कि आप उससे मुहब्बत रखते हैं।
- अल्लाह के साथ अपने नए ताल्लुक़ के बारे में मज़ीद मालूमात हासिल करने के लिए ख़ुदा के कलाम का मुतालआ करते रहें।

ज़रा सोचें तो

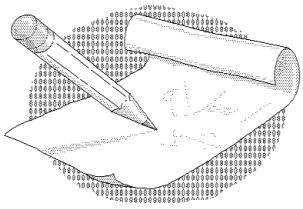

मुबारक हो! अगर आपने दर्जे-बाला अक़दाम उठाए हैं तो आप अपनी नई ज़िंदगी में बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यहीं पर न रुकें। किताबे-मुक़द्दस हमें हिदायत करती है कि "दौड़े हुए जाओ!" (फ़िलिप्पियों 3:14), कि हम अपनी रूहानी ज़िंदगी में दौड़े चलें। जो कुछ आपने सीख लिया है उसे समझने और उस पर अमल करने के लिए अपने आपसे ज़ैल के सवालात पूछें :

- मैं अल्लाह से अपनी मुहब्बत कैसे दिखाऊँ?

- मैंने कौन-से गुनाहों से तौबा की है?

- पाक होने का मतलब क्या है?

- दूसरों ने मेरी ज़िंदगी में तबदीली को कैसे देखा है?

याद करने की आयात

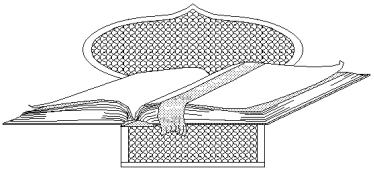

अल्लाह के कलाम को याद करना ईसा मसीह की पैरवी में बढ़ने का बेहतरीन तरीक़ा है। यह करने से हमें आज़माइश में पड़ते वक़्त तक़वियत हासिल होती है। नीज़, कलाम को याद करने से हम बेहतर तौर पर मालूम कर सकते हैं कि ख़ुदा की हमारी ज़िंदगी के लिए मरज़ी क्या है।

ज़ैल की आयत को याद करें जो नई ज़िंदगी के मुताल्लिक़ है।

> चुनाँचे जो मसीह में है वह नया मख़लूक़ है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। (2 कुरिंथियों 5:17)

दुआ

ज़ैल की दुआ आपको नमूने के तौर पर दी गई है ताकि आपको पता चले कि हम किस तरह ईसा मसीह के नाम में शुक्रगुज़ारी की दुआ कर सकें। शुरू में आप यह दुआ इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन याद रहे, ख़ुदा चाहता है कि हम अपनी तरफ़ से भी दुआ करें। ख़ुदा के पास सिर्फ़ वही दुआ क़ाबिले-क़बूल है जो हमारे दिलों से निकलती है। दूसरों की पेशकरदा दुआओं को बेतवज्जुही से दोहराने से हम उसे राज़ी नहीं कर सकते (मत्ती 6:7)।

ऐ ख़ुदावंद ख़ुदा ! मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मुझे अपने फ़रज़ंद मसीह के नाम में अपने पास आने का हक़ दिया है। तूने मुझे एक नई मख़लूक़ बनाया है। और मुझे मेरे गुनाहों से धोकर साफ़ किया है। तेरी मेहरबानी है कि तूने मुझे यह नई ज़िंदगी गुज़ारने के लिए चुन लिया है। मैं तेरा शुक्र करता हूँ। दुआ है कि मेरी ज़िंदगी शुक्र के इस एहसास का इज़हार करे, कि जो कुछ मैं करूँ या कहूँ तुझे पसंद हो। मैं यह दुआ ईसा मसीह के नाम में माँगता हूँ। आमीन।

2

आप कौन हैं? आप में रूहुल-क़ुद्स

न सिर्फ़ आपका अल्लाह के साथ ताल्लुक़ तबदील हो गया है बल्कि साथ साथ उसने आपको रूहुल-क़ुद्स बख़्श दिया। वही ईसा मसीह के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारने में आपकी मदद करता है।

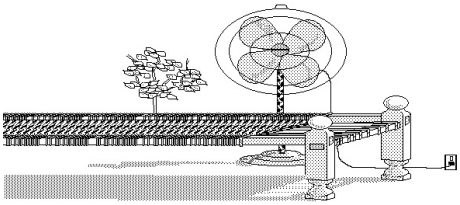

बिजली का पंखा एक हैरतअंगेज़ ईजाद है जो शदीद गरमी का मुक़ाबला करने के लिए लोगों की मदद करता है। लेकिन अगर बिजली न हो तो यह बिलकुल बेकार है। अगर बिजली न हो तो मशीन काम नहीं करेगी, चाहे वह कितने ही बेहतर तरीक़े से क्यों न बनाई गई हो।

हमारी रूहानी ज़िंदगी भी ऐसी ही है। अल्लाह ने हमें मुक़द्दस क़ौम में तबदील किया है ताकि हम पाको-मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारें। लेकिन हम वह ताक़त, हिकमत और क़ाबिलियत कहाँ से लाएँ जो नई ज़िंदगी गुज़ारने के लिए दरकार है? ख़ुदा ने हमें बग़ैर बिजली के नहीं छोड़ा बल्कि उसने रूहुल-क़ुद्स हमें इनायत फ़रमाया ताकि वह हमारे अंदर बसे और हमारी राहनुमाई करे। यों हम ऐसी ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं जो उसे पसंद है। रूहुल-क़ुद्स किस तरह हमारे अंदर काम करता है?

- आपको रूहुल-क़ुद्स मिला है जो आपके अंदर बसा हुआ है। आसमान पर चढ़ जाने से पहले ईसा मसीह ने अपने पैरोकारों से यह वादा फ़रमाया,

> मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा यानी सच्चाई का रूह। (यूहन्ना 14:16-17)

यह वादा थोड़े अरसे बाद पूरा हो गया (देखिए आमाल बाब 2)। जिस वक़्त रूहुल-क़ुद्स नाज़िल हुआ उस वक़्त पतरस रसूल ने इस वादे की तसदीक़ करके कहा,

> आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा। (आमाल 2:38-39)

यह बात आप पर भी सादिक़ आती है। चूँकि आप ईसा मसीह के पैरोकार बन गए हैं इसलिए आपको भी रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल गई है।

- रूहुल-क़ुद्स पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारने में आपकी राहनुमाई करता है। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है,

> लेकिन आप पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में नहीं बल्कि रूह के इख़्तियार में हैं। शर्त यह है कि रूहुल-क़ुद्स आप में बसा हुआ हो। (रोमियों 8:9)

यह भी लिखा है,

> अगर आप रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अपनी पुरानी फ़ितरत के ग़लत कामों को नेस्तो-नाबूद करें तो फिर आप ज़िंदा रहेंगे। जिसकी भी राहनुमाई रूहुल-क़ुद्स करता है वह अल्लाह का फ़रज़ंद है। (रोमियों 8:13-14)

- दुआ माँगते वक़्त रूहुल-क़ुद्स हमारी मदद करता है। हक़ीक़त में दुआ अल्लाह से गुफ़्तगू है। चूँकि हम उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम में दुआ करते हैं इसलिए ख़ुदा हमारी दुआएँ सुनता है (दुआ के बारे में देखें तीसरा सबक़)। चूँकि हम कमज़ोर इनसान हैं इसलिए हम मुनासिब दुआ करने से क़ासिर रहते हैं। इसलिए अल्लाह ने हमारे साथ वादा फ़रमाया है कि

> इसी तरह रूहुल-क़ुद्स भी हमारी कमज़ोर हालत में हमारी मदद करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि किस तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन रूहुल-क़ुद्स ख़ुद नाक़ाबिले-बयान आहें भरते हुए हमारी शफ़ाअत करता है। (रोमियों 8:26)

मुझे क्या करना चाहिए?

अब तो आप रूहुल-क़ुद्स के बारे में जान गए हैं जो आप में है। अब लाज़िम है कि आप ख़ुद क़दम उठाएँ ताकि रूहुल-क़ुद्स आपकी ज़िंदगी के हर पहलू में आपकी राहनुमाई करे। किस तरह पाक रूह के तहत चलना चाहिए?

- पाक रूह की नेमत के लिए अल्लाह का शुक्र करके दुआ करें कि वह आपको उस काम के लिए हस्सास बनाए जो मुक़द्दस रूह आपके अंदर कर रहा है।

- जब कभी आप गुनाह की आज़माइश में जा पड़ें तो अपने अंदर बसनेवाले रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ मुतवज्जिह हो जाएँ और बुराई पर ग़लबा पाने के लिए उससे क़ुव्वत हासिल करें।

- ख़ुदा के क़रीब रहने की शदीद आरज़ू रखें, और उसे मज़ीद जानने की गहरी ख़ाहिश रखें। रूहुल-क़ुद्स हमें अल्लाह की सच्चाई के बारे में सिखाना चाहता है। हाँ, वह ख़ुदावंद ईसा मसीह को जलाल देना चाहता है (यूहन्ना 16:13-15)। जब आप यह अपनी ज़िंदगी का मक़सद बना लेंगे तो रूहुल-क़ुद्स आपकी मदद के लिए हाज़िर रहेगा।

ज़रा सोचें तो

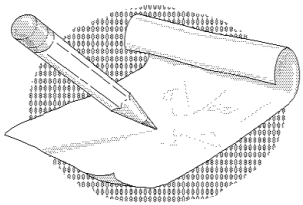

नई ज़िंदगी के मुताल्लिक़ आपके इल्म में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। लेकिन सबसे ज़रूरी यह है कि आप उसे अमल में लाएँ। जो कुछ आपने सीखा है उसे काम में लाने में ज़ैल के सवालात आपकी मदद करेंगे।

- मेरी ज़िंदगी में कौन-सा गुनाह है जिससे दूर रहने के लिए मुझे रूहुल-क़ुद्स की ताक़त की ज़रूरत है?

- मुझे अपनी ज़िंदगी में ख़ुदा के रूह की क्यों ज़रूरत है?

- मुझे क्या करना चाहिए ताकि ज़ाहिर हो जाए कि मैं अल्लाह को मज़ीद जानना चाहता हूँ?

याद करने की आयात

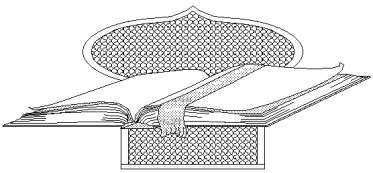

ज़ैल की आयात को याद करें जो यह याद दिलाने में आपकी मदद करेंगी कि रूहुल-क़ुद्स आपकी मदद और राहनुमाई करता है। हिफ़्ज़ करते वक़्त अपने आसमानी बाप का शुक्र करें कि उसने रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए आपके साथ नया रिश्ता क़ायम किया है।

क्योंकि अल्लाह ने जो रूह आपको दिया है उसने आपको ग़ुलाम बनाकर ख़ौफ़ज़दा हालत में नहीं रखा बल्कि आपको अल्लाह के फ़रज़ंद बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकारकर अल्लाह को "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह सकते हैं। रूहुल-क़ुद्स ख़ुद हमारी रूह के साथ मिलकर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं। (रोमियों 8:15-16)

दुआ

ऐ कायनात के क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदावंद, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरह तुझे बाप कह सकता हूँ। मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मुझे नई मख़लूक़ बनाया है, कि तूने ख़ुदावंद ईसा के ख़ून के ज़रीए मुझे गुनाहों से धोकर पाक-साफ़ किया और अपने मुक़द्दस रूह से नवाज़ा है। तेरा शुक्र है कि अब से वह मुझमें बसते हुए तेरी सच्ची राह के मुताबिक़ मेरी मदद करेगा। बख़्श दे कि मैं उसकी आवाज़ पर ध्यान दूँ और उसके इख़्तियार के साथ चलूँ ताकि तेरा गुनाह न करूँ। मुझे अपने मुक़द्दस रूह से मामूर कर ताकि मैं रोज़ाना तेरे हुज़ूर आऊँ। ईसा मसीह के नाम में। आमीन।

3

अल्लाह से आपका रिश्ता : दुआ

ख़ुदा का फ़रज़ंद होने के बाइस आपको ख़ुदा से बात करने का अज़ीम इस्तेहक़ाक़ हासिल हुआ है। अल्लाह की नज़र में आपको उससे किस तरह दुआ करनी है? यह इस सबक़ का मज़मून है।

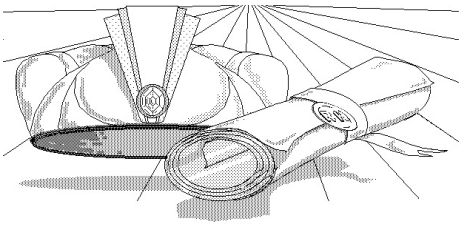

ज़रा तसव्वुर करें कि एक शख़्स अपना कोई मामला किसी बड़े बादशाह के सामने पेश करने की कोशिश करे। चाहे वह कितनी कोशिश क्यों न करे वह बादशाह के हुज़ूर नहीं पहुँच सकता। लाज़िम है कि पहले वह बादशाह के मुलाज़िमों से राबता क़ायम करके उन्हीं से बात करवाए। अब तसव्वुर करें कि बादशाह के बेटे को कोई मसला हो। वह क्या करेगा? वह सीधे बादशाह के पास जाएगा और उससे कहेगा, "अब्बू जी!" बेटे को ऐसा करने की इजाज़त क्यों है? लफ़्ज़ "अब्बू" वजह ज़ाहिर करता है। बाप से ख़ास रिश्ते के बाइस बेटे को बादशाह के हुज़ूर जाने की इजाज़त है।

आप पर भी यही बात सादिक़ आती है। अल्लाह की हैसियत तो रही है। अब तक वह क़ादिरे-मुतलक़ और जहान का बा-रोब बादशाह है। लेकिन अब आप ईसा मसीह के ख़ून के ज़रीए ख़ुदा के ख़ानदान में शामिल होकर उसकी हुज़ूरी में आने के क़ाबिल हो

गए हैं। अब आप उसके हुज़ूर अपनी दरख़ास्तें पेश कर सकते हैं। फ़रज़ंद होने के बाइस आपको दुआ में उस अज़ीम बादशाह से बातें करने का इस्तेहक़ाक़ मिला है। अल्लाह का कलाम दुआ के इस इस्तेहक़ाक़ के बारे में हमें क्या क्या सिखाता है?

- ख़ुदा की मरज़ी है कि हम उससे दुआ करें। इस इमकान की गुंजाइश ही नहीं कि अल्लाह हमारी दुआ क़बूल न फ़रमाए, क्योंकि ईसा मसीह में उसने पहले ही हमें क़बूल फ़रमाया है।

  > और हर मौक़े पर रूह में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते और साबितक़दमी से तमाम मुक़द्दसीन के लिए दुआ करते रहें। (इफ़िसियों 6:18)

  बाप की हैसियत से वह ख़ुश होता है जब उसके फ़रज़ंद दुआ में उसके पास आते हैं। इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि हमारी दुआएँ ख़ुदा के हुज़ूर पसंददीदा ख़ुशबूदार बख़ूर हैं (मुकाशफ़ा 5:8)।

- हमें यक़ीन हो कि अल्लाह अपने वादे पूरे करेगा, कि वह हमारी दुआएँ सुनेगा।

  > लेकिन अपनी गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज की मानिंद होता है जो हवा से इधर-उधर उछलती बहती जाती है। (याक़ूब 1:6)

- लाज़िम है कि हम ईसा के नाम में दुआ करें, क्योंकि हम ख़ुदा के फ़रज़ंद ईसा मसीह के बाइस उसके हुज़ूर आ सकते हैं। हमें सिर्फ़ इसी लिए दुआ करने का हक़ हासिल है। आसमान पर चढ़ जाने से पहले ईसा ने अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि

  > मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।
  > (यूहन्ना 16:23-24)

- ज़रूरी है कि हम दुआ में अल्लाह से यों माँगें जैसे ईसा ने उससे माँगा। लूक़ा 5:16 हमें बताती है कि अगरचे अल-मासीह बहुत मसरूफ़ रहता था फिर भी

वह बीच में कुछ देर के लिए बाहर तनहाई में जाकर दुआ किया करता था। चूँकि ईसा मसीह अल्लाह के तहत ज़िंदगी गुज़ारने का नमूना है इसलिए लाज़िम है कि हम रोज़ाना वक़्त निकालकर दुआ में अपने आसमानी बाप से बातें करते रहें।

ज़रा सोचें तो

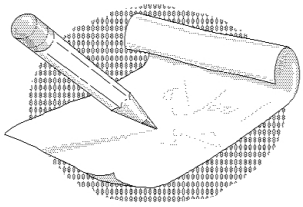

अल्लाह के फ़रज़ंद होने के बाइस आपको उससे दुआ करने की ख़ाहिश तो है। लेकिन हमें किस तरह दुआ करना चाहिए? ख़ुदा नहीं चाहता कि आप दूसरों की माँगी हुई दुआएँ महज़ ज़बान से दोहराएँ बल्कि वह चाहता है कि आप अपने दिल से ही अपनी बात पेश करें। यह सीखने के लिए कि हमें अल्लाह से दुआ कैसे करना चाहिए ईसा ने हमें एक दुआ सिखाई है जो हम बतौरे-नमूना इस्तेमाल कर सकते हैं,

> ऐ हमारे आसमानी बाप,
> तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
> तेरी बादशाही आए।
> तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है
> ज़मीन पर भी पूरी हो।
> हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
> हमारे गुनाहों को माफ़ कर
> जिस तरह हमने उन्हें माफ़ किया
> जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।
> और हमें आज़माइश में न पड़ने दे
> बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
> क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल
> अबद तक तेरे ही हैं।
> (मत्ती 6:9-13)

- हमें हिदायत की गई है कि हम अल्लाह से मुख़ातिब होते वक़्त उसका एक ख़ास लक़ब इस्तेमाल करें। वह कौन-सा लक़ब है?

- हम यह लक़ब क्यों इस्तेमाल कर सकते हैं?

- हमें कौन-से गुनाहों की माफ़ी माँगनी चाहिए?

- ज़ैल में रोज़ाना की चंद ज़रूरियात लिखें जो आप दुआ में ख़ुदा को पेश कर सकते हैं।

- मैं किस तरह अल्लाह के नाम की पाकीज़गी और क़ुद्दूसियत क़ायम रख सकता हूँ?

- क्या मेरी दुआओं से ख़ुदा का यह ख़ौफ़ नज़र आता है?

मुझे क्या करना चाहिए?

दुआ के लिए वक़्त निकालें। कोई ख़ामोश जगह ढूँडें जहाँ आप तनहाई में ज़बानी दुआ कर सकें। या अगर आपको तनहाई न मिल सके तो फिर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जिह

होकर ख़ामोशी से उससे बात करें। ज़ैल में चंद मशवरे दिए गए हैं जिनको आप दुआ करते वक़्त शायद इस्तेमाल करें।

- ख़ुदा को अपना आसमानी बाप समझकर उससे मुख़ातिब हों।
- यह कहकर दुआ करें कि मैं तेरे फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम में तेरे पास आ रहा हूँ।
- जो कुछ उसने आपके लिए क्या है उसके लिए उसका शुक्र करें।
- उससे इल्तिजा करें कि वह कुछ माफ़ कर जो तुझे ना-पसंद हो।
- उससे इल्तिजा करें कि पाक ज़िंदगी गुज़ारने में मेरी राहनुमाई कर।
- दुआ सुनने के लिए उसका शुक्र करें।

अल्लाह के हुज़ूर आने और उससे दुआ माँगने का यह अमल अपनी रोज़मर्रा की आदत बना लें। याद रहे कि वह आपका बाप है, लिहाज़ा आप उसके हुज़ूर किसी भी सबब से आ सकते हैं। वह आपसे मुहब्बत करता है और चाहता है कि आप उसके क़रीब आएँ।

याद करने की आयात

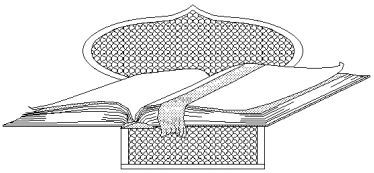

जो दुआ ईसा ने हमें सिखाई और जिसका ज़िक्र हो चुका है उसे याद करना चाहिए (मत्ती 6:9-13)। याद करते वक़्त इसे दिल में भी कहें। लेकिन याद रहे कि जो कुछ कह रहे हैं उस पर आपकी पूरी पूरी तवज्जुह भी हो। क्योंकि ख़ुदा हमारे दिलों की दुआएँ भी सुनता है, न सिर्फ़ वह कुछ जो हमारे मुँह से निकलता है।

दुआ

ऐ आसमानी बाप! मैं ईसा मसीह के नाम में तेरे हुज़ूर आया हूँ। तेरा शुक्र है कि हम बाप कहकर तुझे पुकार सकते हैं। तेरा शुक्र है कि हम तेरे हुज़ूर आकर तुझसे दुआ माँग सकते हैं। तेरा शुक्र है कि तू हमारा अज़ीम परवरदिगार है जिसने मेरी तमाम ज़रूरियात पूरी की हैं। ख़ासकर नजात के लिए तेरा शुक्र है। दुआ है कि तू मेरे दोस्तों और रिश्तेदारों को भी नजात और हमेशा की ज़िंदगी की नेमत अता फ़रमाए। अगर मैंने तुझे किसी तरह का रंज पहुँचाया हो तो मुझे माफ़ फ़रमा और मुझे पाकीज़गी की राह पर ले चल। तेरा शुक्र है कि तूने मेरी दुआएँ सुन ली हैं। ईसा मसीह के नाम में यह सब कुछ माँगता हूँ। आमीन।

4

अल्लाह से आपका रिश्ता : कलाम का मुतालआ

जब हम पाक सहायफ़ का मुतालआ करते हैं तो ख़ुदा हमें तरबियत देकर हमारी राहनुमाई करता है। अल्लाह कैसे अपने कलाम के वसीले से हमसे बात करता है? यह इस सबक़ का मज़मून है।

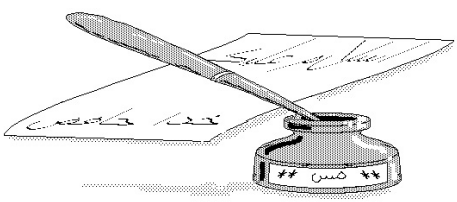

दुआ दोतरफ़ा होती है। दुआ में न सिर्फ़ आप ख़ुदा से बात करते हैं बल्कि अल्लाह भी आपसे हमकलाम होता है। हम सीख चुके हैं कि ख़ुदा का रूह आप में बसते हुए आपकी राहनुमाई करता है। अब हम सीखेंगे कि अल्लाह किस तरह अपने पाक कलाम के वसीले से हमसे हमकलाम होता है।

किताबे-मुक़द्दस एक खत से मुताबिक़त रखती है जिसमें ख़ुदा ज़ाती तौर पर आपसे हमकलाम हुआ है। तसव्वुर करें कि आपका एक अज़ीज़ दोस्त जो आपसे बहुत दूर है आपको खत लिखता है जिसमें वह बहुत-सी अहम और मज़ेदार बातें आपको बताता है। यह खत मिलने पर आपका इससे सुलूक क्या होगा? क्या आप इसे जल्दी से पढ़कर

फेंक देंगे? हरगिज़ नहीं। आप खत को महफ़ूज़ रखकर अपने दोस्त की याद में उसे बार बार पढ़ते रहेंगे ताकि दोस्त और उसकी बातें याद रहें। इस दुनियावी खत की निसबत अल्लाह का कलाम कितनी ज़्यादा अहमियत का हामिल है! उसने अपना पैग़ाम रसूलों की मारिफ़त आप तक पहुँचाया है ताकि आप जान लें कि ज़िंदगी कैसे गुज़ारी जाए। कलामे-पाक ख़ुद ही फ़रमाता है कि अल्लाह का कलाम पढ़ना निहायत ही अहम है।

- मसीह के शागिर्द को ज़िंदगी किस तरह गुज़ारनी है? कलाम फ़रमाता है,

  > हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो। (2 तीमुथियुस 3:16-17)

- यह मालूम करना हमारी दिली ख़ाहिश होनी चाहिए कि ख़ुदा हमारे लिए क्या चाहता है। इसलिए हमें रोज़ाना अल्लाह के कलाम का मुतालआ करना चाहिए। ज़बूर-नवीस फ़रमाता है,

  > तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन-भर मैं उसमें महवे-ख़याल रहता हूँ। (ज़बूर 119:97)

- हमें मुक़द्दस सहायफ़ की गहराई में जाकर उसे अच्छी तरह से जान लेना चाहिए ताकि गुनाह से बचे रहें। दाऊद बादशाह ने ज़बूर में लिखा,

  > मैंने तेरा कलाम अपने दिल में महफ़ूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ। (ज़बूर 119:11)

  जब हम ख़ुदा का कलाम पढ़ें, उसका बग़ौर मुतालआ करें और दिल से उस पर अमल भी करें तो हमें आज़माइश का सामना करने की ताक़त मिलती है।

- लाज़िम है कि हम न सिर्फ़ अल्लाह का कलाम सुनें और पढ़ें बल्कि उस पर अमल करने के लिए तैयार भी रहें।

> कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको फ़रेब देंगे। जो कलाम को सुनकर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता है। अपने आपको देखकर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा। इसकी निसबत वह मुबारक है जो आज़ाद करनेवाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र डालकर उसमें क़ायम रहता है और उसे सुनने के बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है। (याक़ूब 1:22-25)

- अल्लाह से हमारे ताल्लुक़ को तब ही तक़वियत मिलती है जब हम पाक सहायफ़ में उसके मुकाशफ़े पर ग़ौर करते हैं।

> मैं ही ने इसका एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं हुआ बल्कि सिर्फ़ मुझी से। तुम ही मेरे गवाह हो कि मैं ही ख़ुदा हूँ। यह रब का फ़रमान है। (यसायाह 43:12)

मुझे क्या करना चाहिए?

अल्लाह के कलाम की अहमियत जानकर आप उसका मुतालआ शुरू करना चाहेंगे। कलाम का मुतालआ हर ईमानदार की आदत बनना चाहिए। लेकिन किस तरह? ज़ैल के मशवरे ख़ुदा के कलाम को अपने दिल में बसाने में आपकी मदद करेंगे।

- शुरू में अल्लाह के कलाम का मुतालआ करने के लिए तक़रीबन दस मिनट मुक़र्रर करें। यह वक़्त शायद रात को सोने से पहले या सुबह को उठने के फ़ौरन बाद हो। जैसे जैसे आप मसीह के पक्के शागिर्द बनते जाएँगे वैसे वैसे आप दस मिनट से ज़्यादा वक़्त सर्फ़ करना चाहेंगे। लेकिन इस मरहले पर थोड़े वक़्त से शुरू करना आसान होगा। अहम बात यह है कि यह आदत बन जाए।

- इंजील की एक किताब चुन लें। उसमें से तक़रीबन छः या सात आयात रोज़ाना पढ़ें। मिसाल के तौर पर आप लूक़ा की इंजील से शुरू कर सकते हैं, जो हमें ख़ुदावंद ईसा मसीह का नमूना पेश करती है, वही नमूना जिस पर हमें चलना है।

- उसका मुतालआ करते वक़्त अपने आपसे यह तीन सवाल पूछें,

  - इस हिस्से में ख़ुदा मुझे क्या फ़रमाता है?
  - इस पैग़ाम के बदले मेरा जवाबी क़दम क्या होना चाहिए?
  - इस सबक़ को अमली जामा पहनाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

- एक छोटी-सी कापी ख़रीदना मुफ़ीद होगा। उसमें आप उन सवालात के जवाब लिखें, नीज़ वह कुछ जो आपने अल्लाह के कलाम के मुतालए से सीख लिया है।

- पढ़ने से पहले दुआ करें कि रूहुल-क़ुद्स आपको समझ अता फ़रमाए। और पढ़ने के बाद दुआ करें कि जो कुछ आपने सीख लिया है उस पर अमल करने की वह आपको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मिसाल

ख़ुदा के कलाम से जो कुछ आपने सीखा है उसे अपनी कापी में ज़ैल के नमूने के मुताबिक़ दर्ज करें।

- ज़ैल की आयात पढ़ें।

> मुहतरम थियुफ़िलुस, बहुत-से लोग वह सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े हुआ है। उनकी कोशिश यह थी कि वही कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का कलाम सुनाने की ख़िदमत सरंजाम दे रहे हैं। मैंने भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम करूँ। अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए लिखना चाहता हूँ। आप यह पढ़कर जान

> लेंगे कि जो बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और दुरुस्त हैं। (लूक़ा 1:1-4)

- **सवाल :** इस हिस्से में अल्लाह मुझे क्या फ़रमाता है?

  जवाब : ख़ुदा मुझे इन आयात में यक़ीन दिलाता है कि उसके कलाम में जो कुछ लिखा है वह सच और क़ाबिले-भरोसा है।

- **सवाल :** इस पैग़ाम के बदले मेरा जवाबी क़दम क्या होना चाहिए?

  जवाब : मैं अल्लाह का शुक्र अदा करूँगा कि उसका कलाम दुरुस्त है और यक़ीन करूँगा कि यह सच्चा है।

- **सवाल :** इस सबक़ को अमली जामा पहनाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

  जवाब : मैं रोज़ाना किताबे-मुक़द्दस का मुतालआ करूँगा और जो कुछ मैंने सीखा है उस पर अमल करता रहूँगा।

याद करने की आयात

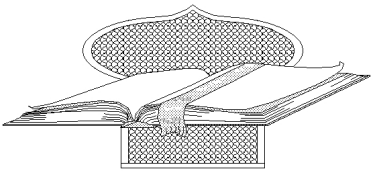

अपने आपको अल्लाह के कलाम की अहमियत की याद दिलाते रहें। यह करने का बेहतरीन तरीक़ा उसे हिफ़्ज़ करना है। ज़ैल की आयत याद करते वक़्त यह न भूलें कि उसमें आपके लिए एक अहम पैग़ाम है। अपने आपको इस बात की याद दिलाने के लिए "नौजवान" की जगह अपना नाम डालें ताकि आप ख़ुद भी उस पर अमल करें।

> नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे। (ज़बूर 119:9)

दुआ

ऐ ख़ुदावंद ख़ुदा, अबदी बाप! मेरी मदद कर ताकि कभी भी तेरे कलाम के मुतालए से न थकूँ। तुझसे सीखने की मेरी ख़ाहिश को रोज़ाना बढ़ाता रह। मुझे अपने रूहुल-क़ुद्स से समझ और तौफ़ीक़ अता फ़रमा ताकि जो कुछ मैं सीखूँ उस पर अमल करके तेरा फ़रमाँबरदार बनूँ। मैं यह दुआ ईसा मसीह के नाम में माँगता हूँ। आमीन।

5

ईमानदारों से आपका रिश्ता : रिफ़ाक़त

जिन्हें भी ईसा मसीह के वसीले से नजात हासिल हुई है उनका एक दूसरे से भाई-बहनों का-सा ख़ास रिश्ता क़ायम हुआ है। ख़ुदा की मरज़ी यह है कि आप मुहब्बत और इत्तहाद के लिहाज़ से दीगर पैरोकारों के साथ ताल्लुक़ात में बढ़ते जाएँ।

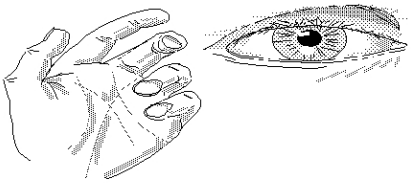

कहा जाता है कि "एक और एक ग्यारह।" यह बात आपकी रूहानी ज़िंदगी पर भी सादिक़ आती है। अल्लाह का मक़सद यह नहीं कि हम ईसा मसीह के पैरोकार बनकर तनहा रहें बल्कि वह यह चाहता है कि हम एक दूसरे की ज़िंदगी में हिस्सा लेते रहें। उसकी मरज़ी यह है कि हम रूहानी बलूग़त तक पहुँचने में एक दूसरे की मदद करें । कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है कि मसीह सबका सर है जबकि हम बदन के आज़ा हैं (कुलुस्सियों 1:18)।

अगर जिस्म की सिर्फ़ आँख होती तो हम देख तो सकते लेकिन मज़ीद कुछ भी न कर सकते। या अगर हमारे जिस्म का सिर्फ़ हाथ होता तो हम काम तो कर सकते लेकिन देख न सकते। जिस्म का हर एक अज़ु पूरे जिस्म के लिए अहम होता है। इसी तरह आप

भी अल्लाह के ख़ानदान का हिस्सा होने के बाइस मसीह के जिस्म का अहम अज़ु हैं। इसलिए लाज़िम है कि आप उन सबके साथ रिफ़ाक़त रखें जो आपकी तरह ख़ुदा से मुहब्बत रखते हैं।

कलाम में मसीह के उन पैरोकारों की अच्छी मिसाल मिलती है जिन्होंने रूहुल-क़ुद्स की राहनुमाई के तहत ईमान में आगे बढ़ने में एक दूसरे की मदद की।

> यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे। सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़ से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए। जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी। अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्होंने हर एक को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। रोज़ाना वह यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती खाना खाते और अल्लाह की तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के मंज़ूरे-नज़र थे। और ख़ुदावंद रोज़ बरोज़ जमात में नजातयाफ़्ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा। (आमाल 2:42-47)

इस वाकिये से मालूम होता है कि रूहानी रिफ़ाक़त क्या है।

- वह रोज़ाना दुआ करने, इबादत करने और अल्लाह के कलाम का मुतालआ करने के लिए जमा होते थे।
- जो ज़रूरतमंद होते थे उनकी वह दिलो-जान से मदद करते थे।
- वह मिलकर ख़ुदा की हम्द करके ख़ुलूसदिली से ख़ुशियाँ मनाते थे।
- मसीह में इस रिफ़ाक़त और यगांगत के बाइस दीगर बहुत-से लोग भी ईमान लाए।

मुझे क्या करना चाहिए?

अब चूँकि आपको रिफ़ाक़त के बारे में कुछ न कुछ इल्म हासिल हुआ है इसलिए आप ज़रूर नई ज़िंदगी के इस पहलू का तजरिबा करना चाहेंगे। ज़ैल में आपको चंद अमली मशवरे दिए गए हैं जो दूसरे पैरोकारों से रिफ़ाक़त रखने में आपकी मदद करेंगे।

- उनको तलाश करें जिनके साथ मिलकर आप किताबे-मुक़द्दस पढ़ सकें और दुआ कर सकें।
- अगर मसीह के पैरोकारों का कोई ऐसा गुरोह हो जो बाक़ायदगी से इबादत करता हो तो वफ़ादारी से उसमें हिस्सा लें।
- अगर आप दूसरी जगहों पर रहनेवाले ईमानदारों को जानते हों तो उनके पास आया-जाया करें ताकि आप मिलकर दुआ कर सकें। अगर मुमकिन हो उनको अपने हाँ आने की दावत दें ताकि आप मिलकर अल्लाह की इबादत कर सकें।
- अगर आप मसीह के किसी ऐसे पक्के पैरोकार को जानते हों जो आपसे बहुत दूर रहता हो तो उस आदमी के साथ बाक़ायदा खतो-किताबत रखने का अज़म करें। यों वह आपके लिए दुआ करके रूहानी ज़िंदगी में आपकी हौसलाअफ़ज़ाई कर सकेगा।

ज़रा सोचें तो

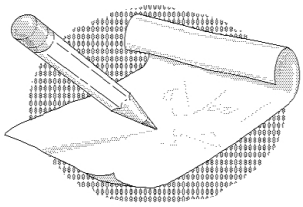

हो सकता है कि दूसरे मोमिनीन के साथ बाक़ायदा मिलने-जुलने में आपको दिक़्क़त पेश आती हो। लेकिन जो कुछ हो सके उसे करने की पूरी कोशिश करें। यह आपकी रूहानी तरक़्क़ी के लिए बहुत ज़रूरी है। अगर आप आग में से कोई जलता हुआ अंगारा बाहर निकालें तो वह जल्द ही बुझकर ठंडा पड़ जाएगा। लेकिन अगर आप उसे वापस आग में डाल दें तो वह दुबारा जलने लगेगा। रिफ़ाक़त भी अंगारा की तरह है। जितने हम रिफ़ाक़त रखें उतना ही हम मसीह में तरक़्क़ी करते जाएँगे। और जितने हम दूसरों से अलग रहें उतना ही हम रूहानी तौर पर ठंडे पड़ जाएँगे।

ज़ैल के सवालात पर ग़ौर कीजिए

- उन मोमिनीन के नाम क्या हैं जिनसे मैं रिफ़ाक़त रख सकता हूँ?

- मेरी वह कौन-सी ज़रूरियात हैं जिनमें दूसरे मेरी मदद कर सकते हैं?

- मैं किस तरह दूसरे मोमिनीन की मदद करके उन्हें मुहब्बत दिखा सकता हूँ?

- इस हफ़्ते में मैं ख़ुदावंद ईसा मसीह के किसी दूसरे पैरोकार से रिफ़ाक़त रखने के लिए क्या करूँगा?

याद करने की आयात

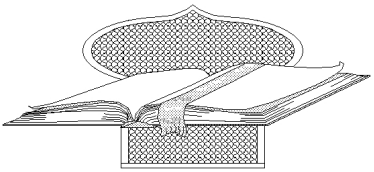

रिफ़ाक़त का अहम पहलू ईसा मसीह में यगांगत है। ध्यान दें कि हमारे नसली इख़्तिलाफ़ (मिसाल के तौर पर पंजाबी, सिंधी या मुहाजिर) या हमारे समाजी इख़्तिलाफ़ (मिसाल के तौर पर अमीर या ग़रीब, भंगी या आला अफ़सर वग़ैरा) हमें अपने ईसाई भाइयों से रिफ़ाक़त रखने से न रोकें। हफ़्ते के दौरान ज़ैल की आयत को बार बार दोहराएँ ताकि उसकी हक़ीक़त दिल में बैठ जाए।

> अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं। (गलतियों 3:28)

दुआ

ऐ प्यारे ख़ुदावंद ख़ुदा! उन दूसरे ईमानदारों के लिए तेरा शुक्र है जो तुझे पसंददीदा ज़िंदगी गुज़ारने में मेरी मदद कर सकते हैं। मेरी मदद कर ताकि मैं वफ़ादारी से उनकी रिफ़ाक़त की तलाश में रहूँ जो मसीह के नाम में जमा होते हैं और हम मिलकर तेरी इबादत करें। ऐसे लोग मेरी ज़िंदगी में ला जो ईमान में मेरी राहनुमाई करें। मैं मसीह के नाम में यह दुआ माँगता हूँ। आमीन।

6

ग़ैरईमानदारों से आपका ताल्लुक़ : तबलीग़

आप ख़ुदावंद ईसा मसीह के हैं। हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि हम उसका पैरोकार होने से इनकार न करें बल्कि उसके नाम को जलाल दें।

ईसा मसीह का पैरोकार बनने से ग़ालिबन आपके रिश्तेदार और दोस्त परेशान हो गए हैं। अगरचे आपने सच्चाई को क़बूल करके गुनाह से नजात पा ली है ताहम वह आपसे नाराज़ हैं। वह इस बात को क़बूल नहीं करेंगे बल्कि आपको वापस लाने की भरपूर कोशिश करेंगे। ग़ालिबन ऐसे लोग भी होंगे जिनको यह मालूम न होगा कि आप ईसा मसीह के शागिर्द बन गए हैं। हाँ, अगर उन्हें यह मालूम हो जाए तो हो सकता है वह आपका जीना हराम कर दें। तो फिर आपको क्या करना चाहिए? क्या बुरे नतायज के बावुजूद भी आपको अपने रिश्तेदारों को बताना चाहिए? या क्या आपको हक़ीक़त छुपाकर ईमान को अपने दिल तक महदूद रखना चाहिए? यह बहुत ही मुश्किल सवालात हैं। लेकिन यह वह फ़ैसले हैं जो आपको लाज़िमी तौर पर करने हैं।

जो अहम सवालात आप अपने आपसे पूछेंगे वह यह हैं,

- ईसा मसीह मुझसे क्या अमल चाहता है?

- मैं इस बात में उसे कैसे ख़ुशी दिला सकूँ?

इन सवालों के जवाब में आइए हम उस पर ग़ौर करें जो ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को सिखाया। एक मरतबा मसीह ने अपने शागिर्दों को ज़ैल की तालीम दी जब वह उसके साथ थे।

> तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँव तले रौंदा जाएगा। तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाक़े शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता। जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे बरतन के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें। (मत्ती 5:13-16)

दूसरी जगह पर ईसा मसीह ने पैरोकार होने की तकलीफ़ के बारे में अपने शागिर्दों से कहा,

> जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए? इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? जो भी इस ज़िनाकार और गुनाहआलूदा नसल के सामने मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने बाप के जलाल में मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ आएगा। (मरक़ुस 8:34-38)

इन दो हवालजात में हम देखते हैं कि

- मसीह के पैरोकार की हैसियत से हम इस ख़ताकार जहान में रौशनी और नमक की मानिंद हैं।

- ब-हैसियत नमक और रौशनी के हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि हम लोगों के सामने यों चमकें कि वह हमारे अच्छे कामों को देखकर हमारे आसमानी बाप की तारीफ़ करें।

- चूँकि हम अपने उस्ताद ईसा मसीह के पैरोकार हैं इसलिए आएँ हम तकलीफ़ बरदाश्त करने के लिए तैयार रहें। अगर हम उससे शरमाएँ तो वह भी क़ियामत के दिन हमसे शरमाएगा।

मुझे क्या करना चाहिए?

याद रहे कि मसीह की ख़ुशख़बरी दूसरों को बताते ही आपको मुश्किलात का सामना करना पड़ेगा। सच बात कड़वी लगती है। इसलिए ज़रूरी है कि आप मुश्किलात के लिए तैयार रहें।

- रोज़ाना अल्लाह से इल्तिजा करें कि आज़माइश में पड़ते वक़्त आपका ईसा मसीह पर ईमान साबितक़दम रहे।

- अपनी मुश्किलात के बारे में दूसरे ईमानदारों को बताएँ ताकि वह आपके लिए दुआ करें।

- उस क़ुरबानी पर ग़ौरो-ख़ौज़ करते रहें जो मसीह ने आपके गुनाहों की ख़ातिर दी। उसके वादे भी याद रहें, कि वह आपके साथ रहेगा और हर हालत में आपकी मदद करेगा। अगर आप उस पर भरोसा रखें तो वह आपकी मदद करेगा। मुस्तक़बिल में मिलनेवाला वह आसमानी जलाल और सुकून याद करें जो मसीह के वफ़ादारों को मिलेगा।

- मत्ती 10:32-39 पढ़ें। जो कहते हैं कि हम मसीह के शागिर्द हैं उन्हें इस हवाले में सख़्त तंबीह भी की जाती है और उनकी हौसलाअफ़ज़ाई भी की जाती है।

ज़रा सोचें तो

लाज़िम है कि आप दुआ करने लगें कि मैं अपने रिश्तेदारों और अपने दोस्तों में नमक और रौशनी कैसे बनूँ?

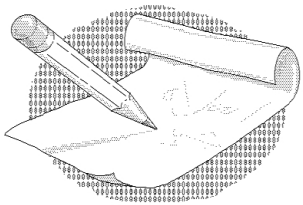

- अपने रिश्तेदारों (बीवी, शौहर, माँ, बाप और बच्चे वग़ैरा) और दोस्तों के पाँच नाम लिखें जिनके बारे में आप चाहते हैं कि वह ईसा मसीह के वसीले से नजात हासिल करें।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

- रोज़ाना दुआ करें कि
  - ► अल्लाह आपके लिए ऐसे मवाक़े फ़राहम करे जब आप उनको मसीह की ख़ुशख़बरी सुना सकें।
  - ► ख़ुदा उनके दिल मसीह की ख़ुशख़बरी सुनने के लिए खोले।
  - ► अल्लाह आपको बात करने और समझाने में अक़्ल दे।
- किसी दूसरे ईमानदार को अपनी यह ख़ाहिश बताएँ ताकि वह आपके लिए दुआ करे कि अल्लाह आपको मसीह की ख़ुशख़बरी पेश करने का मौक़ा फ़राहम करे।

- जब ख़ुदा आपको उनसे बात करने का मौक़ा मुहैया करे तो दुआ करके मौक़े का फ़ायदा उठाएँ।

याद करने की आयात

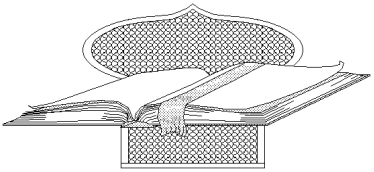

आयात को हिफ़्ज़ करने का बेहतर तरीक़ा यह है कि हर आयत एक अलग कार्ड पर या किसी छोटी-सी कापी में लिखें। तब आप कापी या कार्ड अपने पास रखकर किसी भी वक़्त आयात का मुतालआ करने या उन्हें हिफ़्ज़ करने के लिए पढ़ सकेंगे। जब लोग आपसे आपके दीन के बारे में पूछें तो ज़ैल की आयत आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करेगी कि उनको क्या जवाब देना है।

> जो भी आपसे आपकी मसीह पर उम्मीद के बारे में पूछे हर वक़्त उसे जवाब देने के लिए तैयार रहें। लेकिन नरमदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ जवाब दें। (1 पतरस 3:15)

दुआ

ऐ ख़ुदा बाप! जब मैं सलीब पर तेरे फ़रज़ंद की क़ुरबानी पर ग़ौर करता हूँ तो ख़ौफ़ और शुक्रगुज़ारी से अपना सर झुकाता हूँ। आज के दिन मैं अपने आपको तेरे हवाले करता हूँ। मेरे मुँह से सिर्फ़ वही अलफ़ाज़ निकलें जो तेरे फ़रज़ंद ईसा को जलाल और इज़्ज़त बख़्शें और मेरा चाल-चलन ऐसा हो कि लोग ईसा मसीह को मेरी ज़िंदगी में देख सकें। मुझे हिम्मत और सुकून अता कर ताकि मैं उस उम्मीद के मुताबिक़ जवाब दे सकूँ जो मुझे हासिल है। मसीह के नाम में। आमीन।

7

दुनिया के साथ आपका ताल्लुक़ : आला अख़लाक़ी मेयार

मसीह के शागिर्द गुनाह से पाक-साफ़ ज़िंदगी गुज़ारने में ख़ुदावंद ईसा मसीह के नमूने पर चलने की कोशिश करते हैं। आपका अख़लाक़ी मेयार क्या होना चाहिए? यह इस सबक़ का मज़मून है।

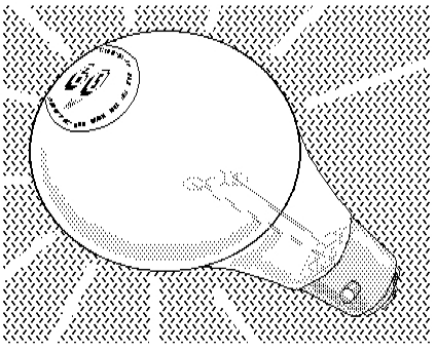

एक आदमी ने बिजली का बल्ब ख़रीद लिया जो ख़राब था। उसने उसे साकेट में डालकर बटन दबाया, लेकिन रौशनी न आई। गो बल्ब देखने में बल्ब ही था, ताहम वह काम नहीं करता था। इसी तरह अगर आप मसीह के शागिर्द हैं तो सिर्फ़ बातें करना काफ़ी नहीं। अपनी ज़िंदगी से दिखाएँ कि आप उसके शागिर्द हैं। जो ईमानदार अख़लाक़ी तौर पर तबदील नहीं हुआ वह उस बल्ब की तरह है जो रौशनी नहीं देता। बल्ब का मक़सद यही है कि वह रौशनी दे। अगर वह रौशनी न दे तो फिर बेकार है। मसीह के शागिर्द का मक़सद यह है कि वह पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारे। अगर यह मक़सद

पूरा न हो जाए तो इसका मतलब है कि उसने अपनी ज़िंदगी अल्लाह के सुपुर्द नहीं की। पाक नविश्ते पाक ज़िंदगी की ख़ूबियाँ बयान करते हैं।

- आपको ईसा मसीह के वसीले से पाक किया गया है।

> [ख़ुदा] ने मसीह के इनसानी बदन की मौत से आपके साथ सुलह कर ली है ताकि वह आपको मुक़द्दस, बेदाग़ और बेइलज़ाम हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। (कुलुस्सियों 1:22)

- आपको पाक-साफ़ ज़िंदगी गुज़ारनी है। पतरस रसूल लिखता है कि

> आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़रज़ंद हैं, इसलिए उन बुरी ख़ाहिशात को अपनी ज़िंदगी में जगह न दें जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे। वरना वह आपकी ज़िंदगी को अपने साँचे में ढाल लेंगी। इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस है उसी तरह आप भी हर वक़्त मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारें। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो क्योंकि मैं मुक़द्दस हूँ।”
> (1 पतरस 1:14-16)

- कलाम हमें उन गुनाहों की मिसाल देता है जिनसे हमें बचना है। पौलुस रसूल हमें ख़बरदार करता है कि

> जो काम पुरानी फ़ितरत करती है वह साफ़ ज़ाहिर होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी, ऐयाशी, बुतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, अनबन, पार्टीबाज़ी, जलन, नशाबाज़ी, रंगरलियाँ वग़ैरा। मैं पहले भी आपको आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।
> (गलतियों 5:19-21)

- फिर पौलुस रसूल वह ख़ूबियाँ पेश करता है जिनको अल्लाह हमारी ज़िंदगी में फ़रोग़ देना चाहता है।

> रूहुल-क़ुद्स का फल फ़रक़ है। वह मुहब्बत, ख़ुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी, वफ़ादारी, नरमी और ज़ब्ते-नफ़्स पैदा करता है। (गलतियों 5:22-23)

मुझे क्या करना चाहिए

हमें पाक ज़िंदगी गुज़ारनी है। यह जानना आसान है। लेकिन इस पर अमल करना मुश्किल है। बुरी आदतों और आज़माइशों का मुक़ाबला करना मुश्किल है, ख़ुसूसन जब यह जंग रोज़ाना छिड़ जाए। ख़ुदा का शुक्र है कि वह इसका तक़ाज़ा नहीं करता कि हम अपनी ही ताक़त से यह जंग लड़ें। क्योंकि उसने वादा किया है कि वही हमें ईसा मसीह के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारने की क़ुव्वत अता फ़रमाएगा (फ़िलिप्पियों 4:13)।

ध्यान दें कि अगर हम मसीह की पैरवी करना चाहें तो गुनाह को जड़ से उखाड़ने और रूहानी तरक़्क़ी करने के कुछ लाज़िमी क़दम उठाने हैं :

- जो भी रवैया, सोच या अमल ख़ुदा को पसंद न हो उसे जड़ से उखाड़ना अपना नस्बुल-ऐन बना लें। याद रखें कि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद की मौत और फिर जी उठने से आपको इसलिए बुलाया है कि आप पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारें।

- जब कभी आप गुनाह की आज़माइश में पड़ जाएँ या आप किसी मसले का मुनासिब जवाब न जानें तो ज़ैल के सवाल पूछें,

  - मेरा आक़ा मेरी जगह क्या करता?
  - उसकी क्या मरज़ी है कि मैं करूँ?

- रोज़ाना दुआ करें कि अपने रूह से मुझे मामूर करके अपनी हुकूमत के तहत जीने की तौफ़ीक़ बख़्श दे।

- जो ख़ूबियाँ और रवैये ख़ुदा आपकी ज़िंदगी में बढ़ाना चाहता है उनको मालूम करने के लिए किताबे-मुक़द्दस और ख़ासकर ईसा मसीह की ज़िंदगी का मुतालआ करें।

ज़रा सोचें तो

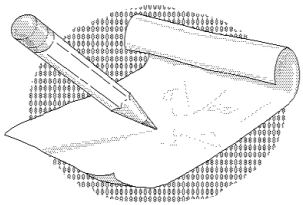

किताबे-मुक़द्दस आपको वह मेयार दिखाएगी जो आपको ज़िंदगी में क़ायम करना है। रूहुल-क़ुद्स इसमें आपकी राहनुमाई करके क़ुव्वत अता फ़रमाएगा। लेकिन लाज़िम है कि आप ख़ुद पाक ज़िंदगी चाहें, कि आप ख़ुद पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारने की सिर-तोड़ कोशिश करें। ज़ैल के सवालात इसमें आपकी मदद कर सकते हैं।

- क्या आप वाक़ई पाक ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं? क्यों?

_____

_____

- अपनी उन सोचों, रवैयों और आमाल की फ़हरिस्त बना लें जो अल्लाह को ना-पसंद हैं मगर अभी तक आपकी ज़िंदगी में मौजूद हैं।

_____

_____

- आप कौन-से क़दम उठाएँगे ताकि यह चीज़ें आपकी ज़िंदगी से दूर हो जाएँ?

_____

_____

- ख़ुदावंद ईसा मसीह की एक ख़ूबी लिखें जो आप अपनी ज़िंदगी में मज़ीद देखना चाहते हैं। (मिसाल के तौर पर ईसा ने फ़रमाया कि “मैं हक़ हूँ” (यूहन्ना 14:6), इसलिए उसके पैरोकार होने की हैसियत से मैं दूसरों से लेन-देन में पूरी तरह दियानतदार और रास्तबाज़ होना चाहता हूँ)।

_____

_____

याद करने की आयात

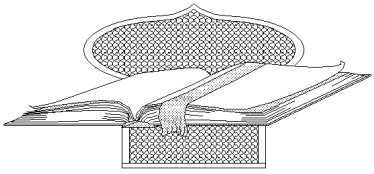

ख़ुदा का कलाम आपकी ज़िंदगी में हैरतअंगेज़ तबदीलियाँ ला सकता है अगर आप उसको याद करके उसके मतलब पर ग़ौर करें। जब आप ज़ैल की आयत हिफ़्ज़ करने लगें तो उसे एक या दो बार अपने अलफ़ाज़ में दोहराएँ ताकि आप बेहतर तौर पर उसका मतलब समझ सकें।

> इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस है उसी तरह आप भी हर वक़्त मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारें।
> (1 पतरस 1:15)

दुआ

ऐ क़ुद्दूस और पुर-जलाल ख़ुदा! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे ईसा मसीह के ख़ून के वसीले से बुलाया है ताकि मैं पाक ज़िंदगी गुज़ारूँ। तेरा शुक्र है कि मैं ईसा मसीह के नमूने पर चलकर ऐसी ज़िंदगी गुज़ार सकता हूँ जो तुझे पसंद है। अब मेरी राहनुमाई फ़रमा और मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि मैं तेरा गुनाह न करूँ बल्कि उन ख़ूबियों को बढ़ाता जाऊँ जो तुझे जलाल दें और जो ज़ाहिर करें कि मैं ईसा मसीह का बालिग़ पैरोकार होता जा रहा हूँ। मैं उसके नाम में दुआ माँगता हूँ। आमीन।

8

गुनाहों की माफ़ी

ख़ुदा ने मसीह के वसीले से आपके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमाए हैं, और आगे भी वह उन्हें माफ़ करता रहेगा। शर्त यह है कि आप पशेमान दिल से अल्लाह के सामने गुनाहों का एतराफ़ करते रहें।

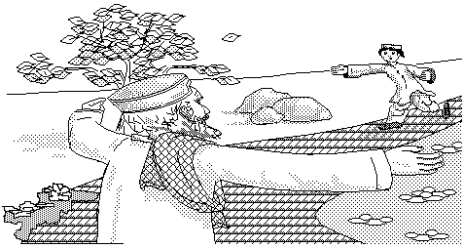

गो हम मसीह की मानिंद बनने के बाइस पाक-साफ़ ज़िंदगी गुज़ारने की पूरी जिद्दो-जहद करते हैं (देखिए सातवाँ सबक़) ताहम कभी कभी हमसे गुनाह सरज़द होता है, और मालूम होता है कि हम अपने ख़ुदा से दूर हो गए हैं। ऐसे करने से हम क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा को दुख पहुँचाते हैं, और जब तक गुनाह हमारी ज़िंदगी में हो तब तक हमारी दुआएँ नहीं सुनी जाएँगी। ऐसी सूरते-हाल में आसमानी बाप से हमारा ताल्लुक़ दुबारा कैसे बहाल हो सकता है?

एक दिन ईसा मसीह ने एक आदमी की तमसील सुनाई जो अपने बाप को छोड़कर दूर-दराज़ मुल्क में चला गया जहाँ वह गुनाह की ज़िंदगी गुज़ारने लगा (लूक़ा 15:11-32)।

बेटा जल्द ही मुफ़लिस हो गया। तब उसे अपने बाप की ना-फ़रमानी करने की बेवुक़ूफी का एहसास हुआ। वह पशेमानी से सरशार अपने बाप के पास वापस लौटा और अपने

गुनाह का एतराफ़ किया। नाराज़ होने के बजाए बाप बेटे के लौट आने पर बेहद ख़ुश हुआ और अपने बेटे को पूरी तरह माफ़ कर दिया। आसमानी बाप और हमारे दरमियान भी यही हालत है। गुनाह हमें ख़ुदा और उस सुकून और मुहब्बत से दूर कर देता है जो हमें मसीह में मिलती है। लेकिन अल्लाह हमें पूरे तौर पर माफ़ी देगा अगर हम उसकी तरफ़ रुजू लाएँ।

किताबे-मुक़द्दस हमें सिखाती है कि अगर हम गुनाह को तर्क करने से इनकार करें तो अल्लाह का ग़ज़ब और सज़ा हम पर नाज़िल होगी। लेकिन हमें यह भी फ़रमाया गया है कि अगर हम तौबा करें तो हमें ख़ुदा के हुज़ूर माफ़ी की ख़ुशी हासिल होगी।

- ख़ुदा नहीं चाहता कि उसके चुने हुए फ़रज़ंद गुनाह के बाइस उससे अलग हो जाएँ बल्कि वह चाहता है कि वह तौबा करके उसके साथ रिश्ते को बहाल करें।

> क्योंकि मैं किसी की मौत से ख़ुश नहीं होता। चुनाँचे तौबा करो, तब ही तुम ज़िंदा रहोगे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। (हिज़क़ियेल 18:32)

- तौबा करने का मतलब यह है कि हम अल्लाह के हुज़ूर अफ़सोस का इज़हार करके अपने गुनाहों को तसलीम करें। दाऊद बादशाह हमें अपने ज़बूरों में दिखाता है कि हमें किस तरह तौबा का इज़हार करना चाहिए।

> तब मैंने तेरे सामने अपना गुनाह तसलीम किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, "मैं रब के सामने अपने जरायम का इक़रार करूँगा।" तब तूने मेरे गुनाह को माफ़ कर दिया। (ज़बूर 32:5)

> चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तसलीम करता हूँ, मैं अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ। (ज़बूर 38:18)

- यह काफ़ी नहीं कि हम अल्लाह के हुज़ूर अपने गुनाहों का एतराफ़ करें बल्कि लाज़िम है कि हम गुनाहों से दूर होकर वह कुछ करें जो हमारे आसमानी बाप को पसंद हो। पौलुस रसूल फ़रमाता है कि सच्ची तौबा का फल रास्तबाज़ी है।

> [मैंने] इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और अपने अमल से अपनी तबदीली का इज़हार भी करें। (आमाल 26:20)

- अल्लाह हमेशा अपने उस फ़रज़ंद को माफ़ करने के लिए तैयार है जो तौबा करके उसकी तरफ़ रुजू लाए।

> लेकिन अगर हम अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को माफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। (1 यूहन्ना 1:9)

मुझे क्या करना चाहिए?

- जो भी गुनाह चुपके से आपकी ज़िंदगी में आए उससे हमेशा बा-ख़बर रहें और उसे तसलीम कर लें।
- पछताकर अपने गुनाह का एतराफ़ करें। ईसा के नाम में ख़ुदा से माफ़ी माँगें। दुआ करें कि वह आपको रूहुल-क़ुद्स के वसीले से इस गुनाह से दूर रहने की तौफ़ीक़ बख़्श दे।
- इस गुनाह से दूर रहने का पक्का इरादा रखें और ऐसे क़दम उठाएँ जिनसे आप आइंदा इस आज़माइश में पड़ने से महफ़ूज़ रहेंगे।
- ख़ुशी मनाएँ और अल्लाह की हम्द करें कि उसने आपको माफ़ कर दिया है।

ज़रा सोचें तो

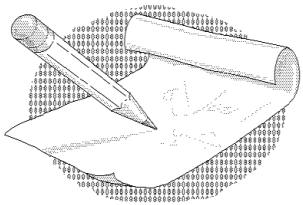

शैतान हमेशा ईमानदारों को मनवाने की कोशिश करता है कि फ़ुलाँ ग़लत काम या ख़याल से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता। कहीं आप धोका न खाएँ! गुनाह को अपने और अपने आसमानी बाप के दरमियान न आने दें। यह मालूम करने के लिए कि आप गुनाह से आज़ाद हैं अपने आपसे ज़ैल के सवालात पूछें।

- मेरी ज़िंदगी में वह कौन-सा ख़याल या अमल है जो ख़ुदावंद ईसा मसीह को पसंद नहीं?

_____

_____

- क्या करना चाहिए ताकि मैं दुबारा वह गुनाह न करूँ? मिसाल के तौर पर अगर आप जिंसी ख़यालात का शिकार हों तो उन कुतुबो-रसायल से और इंटरनेट की उन साइट्स से दूर रहें जो आज़माइश का बाइस हैं। और पक्का इरादा कर लें कि आप कोई भी ऐसी चीज़ न देखेंगे जो आपके ज़हन में ऐसे ग़लत ख़यालात पैदा करे।

_____

_____

- जिस गुनाह का ज़िक्र आप कर चुके हैं ज़ैल की जगह पर एतराफ़ और तौबा की अपनी दुआ लिखें। अल्लाह की बख़्शिश के लिए उसकी शुक्रगुज़ारी करना न भूलें। (जो दुआ इस सबक़ के आख़िर में दर्ज है उसे आप नमूने के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन कोशिश करें कि यह दुआ आपके दिल से निकलती हो।

_____

_____

याद करने की आयात

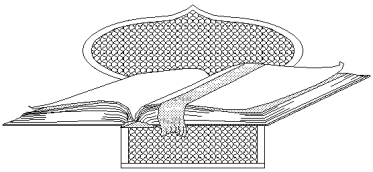

ज़ैल की आयत को याद करें ताकि आइंदा जब कभी गुनाह कर बैठें तो आपको फ़ौरन याद आ जाए कि अल्लाह वफ़ादार और रास्तबाज़ है, कि वह माफ़ कर देगा। अल्लाह माफ़ करनेवाला है। वह उनको सज़ा नहीं देता जिनको वह माफ़ कर चुका है। अपने आजिज़ और तौबा करनेवाले बंदे को वह माफ़ी ही पेश करता है। यह हक़ीक़त है कि अगर हम अपनी बदकारी से फिरकर अपने गुनाहों का इक़रार करें तो हमें ईसा मसीह में माफ़ी मिलती है। ध्यान दें कि आपकी आज़माइशें और हौसलाशिकनियाँ यह हक़ीक़त आपसे छुपाए न रखें।

> लेकिन अगर हम अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को माफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। (1 यूहन्ना 1:9)

दुआ

ऐ मुक़द्दस बाप! मैं अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। इस ख़याल से मेरा दिल दुखी है कि मैंने तुझे दुख पहुँचाया है। मैं तेरे पास तेरे फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम में आता हूँ। मुझे सिर्फ़ उसी की क़ुरबानी के वसीले से माफ़ी का वादा हासिल है। मेहरबानी फ़रमाकर मुझे माफ़ कर और धोकर साफ़ कर दे ताकि मैं एक बार फिर तेरी मुक़द्दस हुज़ूरी में आ सकूँ। मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तू वफ़ादार है, कि तू अपने वादों पर पूरा उतरता है। तेरा शुक्र है कि तूने मुझे ईसा के नाम में माफ़ फ़रमाया है। आमीन।

9

नेक आमाल : सवाब

आप अपने नेक आमाल के वसीले से कभी भी नजात हासिल नहीं कर सकते। मगर ईसा मसीह में नई ज़िंदगी मिलने का एक अहम नतीजा यह है कि आप नेक काम करेंगे।

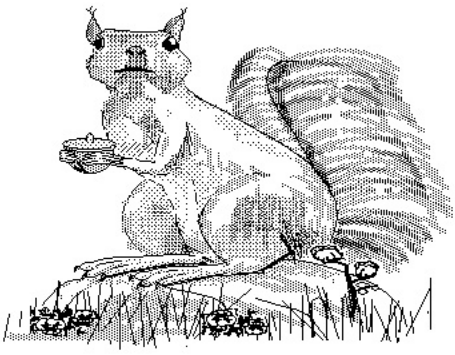

एक गिलहरी का ज़िक्र है जो परिंदा बनना चाहती थी। उसने कहा, "परिंदे उड़ते हैं, लिहाज़ा अगर मैं उड़ सकूँ तब ही परिंदा बन जाऊँगी।" चुनाँचे वह दरख़्तों में दूर दूर तक उछलने-कूदने की मश्क़ करने लगी। लेकिन नतीजा सिर्फ़ यह निकला कि एक दिन ज़्यादा फ़ासिला होने की वजह से वह गिरकर मर गई।

गिलहरी का ख़याल था कि वह उड़ने से परिंदा बन जाएगी। बिलकुल इसी तरह बाज़ लोग सोचते हैं कि नेक आमाल करने से हम नजात हासिल करके अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होने के लायक़ हो जाएँगे। लेकिन जिस तरह गिलहरी उड़ने से परिंदा नहीं बन सकती उस तरह हम भी नेक काम करने से ख़ुदा के फ़रज़ंद नहीं बन सकते। पहले लाज़िम है कि हम ईसा मसीह के वसीले से नई मख़लूक़ बन जाएँ। जिस तरह परिंदे

क़ुदरती तौर पर उड़ते हैं उसी तरह ख़ुदा के फ़रज़ंद क़ुदरती तौर पर नेक आमाल करते हैं। क्योंकि अल्लाह ने हमें नई मख़लूक़ बनाया है जो अच्छे कामों के लिए बनाई गई है।

- किताबे-मुक़द्दस इस बात पर ज़ोर देती है कि हम अपने अच्छे आमाल से नजात हरगिज़ हासिल नहीं कर सकते।

> तो उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि उसके रहम ही ने हमें रूहुल-क़ुद्स के वसीले से बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया और नई ज़िंदगी अता की। (तितुस 3:5)

- लेकिन साथ साथ अल्लाह का कलाम हमें सख़्ती से इससे आगाह करता है कि जो ईसा मसीह के पैरोकार बन गए हैं लाज़िम है कि वह बुरे कामों से दूर रहकर अच्छे काम करें।

> किसी के ग़लत काम के जवाब में ग़लत काम मत करना, न किसी की गालियों के जवाब में गाली देना। इसके बजाए जवाब में ऐसे शख़्स को बरकत दें, क्योंकि अल्लाह ने आपको भी इसलिए बुलाया है कि आप उसकी बरकत विरासत में पाएँ। कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है, "कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना और अच्छे दिन देखना चाहता है? वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से। वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे, सुलह-सलामती का तालिब होकर उसके पीछे लगा रहे।" (1 पतरस 3:9-11)

- हम मसीह के पैरोकार बनकर अच्छे काम करने से उसके नक़्शे-क़दम पर चलते हैं।

> हाँ, हम उसी की मख़लूक़ हैं जिन्हें उसने मसीह में नेक काम करने के लिए ख़लक़ किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरंजाम देते हुए ज़िंदगी गुज़ारें। (इफ़िसियों 2:10)

- दूसरों से अपनी मुहब्बत का इज़हार करने से हम दिखाते हैं कि हम मसीह के हैं।

> जो अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है और उसमें कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर का बाइस बन सके। (1 यूहन्ना 2:10)

न सिर्फ़ यह बल्कि ईसा फ़रमाता है कि ज़रूरतमंदों की मदद करने से हम हक़ीक़त में मसीह की मदद करते हैं।

> मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया वह तुमने मेरे ही लिए किया। (मत्ती 25:40)

मुझे क्या करना चाहिए?

गो हम ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल हुए हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम ख़ुद बख़ुद अच्छे आमाल करने लगेंगे। यह काफ़ी नहीं कि हम अपने अलफ़ाज़ से अल्लाह और इनसान से मुहब्बत का इज़हार करें बल्कि लाज़िम है कि हम यह कुछ अमल में लाएँ। ज़ैल की तजावीज़ मसीह की ख़ातिर दूसरों की मदद करने में आपकी राहनुमाई करेंगी।

- उस मुहब्बत के लिए अल्लाह का शुक्र करें जो उसके फ़रज़ंद में ज़ाहिर हुई है। अर्ज़ करें कि वह आपको मौक़े फ़राहम करे कि आप दूसरों की मदद करके ख़ुदा के साथ अपनी मुहब्बत का इज़हार करें।

- अपने दिल में झाँककर मालूम करें कि क्या आप दूसरों की मदद करने के लिए अपनी अच्छी चीज़ों (वक़्त, पैसे, मिलकियत) में से कुछ क़ुरबान करने के लिए तैयार हैं।

- उन लोगों के बारे में सोचें जिनसे रोज़ाना आपका राबता होता हो। इस पर भी ध्यान दें कि उनकी कौन-सी ज़रूरियात हैं। आप उनकी कैसी मदद कर सकेंगे?

- किसी एक का इंतख़ाब करके मसीह की ख़ातिर उसकी मदद करें। आज ही।

ज़रा सोचें तो

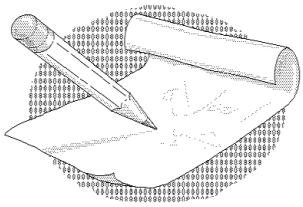

जो भी अपने आपको ईसा मसीह का पैरोकार कहलाए उसके लिए नेकी करना लाज़िम है। मसीह जैसा होने का मतलब यह है कि हम अच्छे काम करें। यानी ऐसे काम जैसे उसने किए। पाक सहायफ़ हमें तालीम देते हैं कि हम ऐसी ज़िंदगी गुज़ारें कि लोग हमारे अच्छे काम देखकर उनके सबब से अल्लाह की तारीफ़ करें (1 पतरस 2:12)। क्या आपकी ज़िंदगी मसीह का इज़हार करती है? ज़ैल के सवालात के दियानतदारी से जवाब दें।

- नेकी करने से कैसे साबित होता है कि मैं ईसा से मुहब्बत करता हूँ?

- मैं किन तरीक़ों से दूसरों के साथ मुहब्बत दिखा सकता हूँ?

- ख़ुदग़रज़ी किस तरह मुझे नेकी करने से रोक सकती है?

- उसका नाम लिखें जिसकी आप इस हफ़ते ख़ुसूसन मदद करेंगे।

- आप किस तरह उसकी मदद करेंगे?

याद करने की आयात

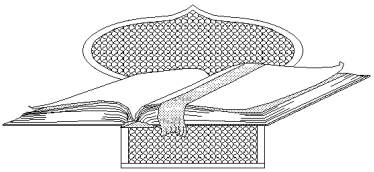

जब भी आप नेकी करें तब लोगों को यक़ीन दिलाएँ कि यह अमल ईसा मसीह की बख़्शिश है न कि आपकी। लोगों को बताएँ कि आप मसीह की मुहब्बत और उस जैसा बनने की ख़ाहिश से मदद कर रहे हैं। इस काम में अपने आपको हिम्मत दिलाने के लिए ज़ैल की आयत हिफ़्ज़ करें।

> और जो कुछ भी आप करें ख़ाह ज़बानी हो या अमली वह ख़ुदावंद ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र करें। (कुलुस्सियों 3:17)

दुआ

ऐ ख़ुदा बाप! मैं तेरे बेटे ख़ुदावंद ईसा मसीह के लिए तेरा शुक्र करता हूँ जिसने मुझे दिखाया कि तुझे पसंददीदा ज़िंदगी क्या है। मेरी आँखें खोल ताकि मैं दूसरों की ज़रूरियात देखकर उनकी मदद करूँ, वैसे ही जैसे ईसा ने दुनिया में रहते हुए दूसरों की मदद की। मेरे दिल को नरम कर और मुझे मेहरबान बना ताकि मैं अपने दिल की ख़ुशी से दूसरों की मदद करने में अपनी दौलत, वक़्त और ताक़त क़ुरबान करूँ, जैसे मेरे ख़ुदावंद ने मेरी ख़ातिर सब कुछ क़ुरबान किया। यहाँ तक कि उसने ज़मीन पर आकर मेरी ख़ातिर अपनी जान दे दी। मैं उसके बेशबहा और पाक नाम में दुआ करता हूँ। आमीन।

10

फ़रमाँबरदारी और अल्लाह की मरज़ी : मसीह की हुक्मरानी

ईसा मसीह आपका ख़ुदावंद और मालिक है। लाज़िम है कि आप अपनी ज़िंदगी के लिए उसकी मरज़ी जानकर उसके फ़रमाँबरदार रहें।

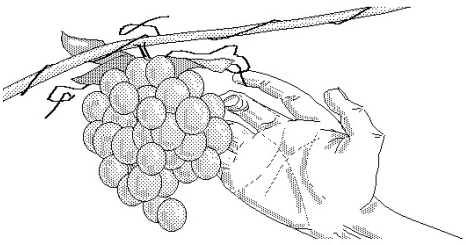

यह अकसर सुनने में आता है कि "रिश्वत लेना ग़लत है लेकिन मैं क्या करूँ? मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है।" या फिर कोई तालिब-इल्म कहता है कि "अगरचे इम्तहान में नक़ल करना गुनाह है लेकिन अल्लाह मुझे माफ़ कर देगा, क्योंकि दूसरी सूरत में मैं फ़ेल हो जाता।" ईसा फ़रमाता है कि फ़रमाँबरदारी बातें करने से ज़्यादा होती है बल्कि हक़ीक़ी फ़रमाँबरदारी हमारे आमाल से ज़ाहिर होती है। उसने एक मरतबा दो बेटों की एक कहानी सुनाई जो मत्ती 12:28-31 में दर्ज है।

बेटों के बाप ने अपने बड़े बेटे को हिदायत की कि जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम कर। बेटे ने जवाब दिया कि "नहीं," लेकिन बाद में उसे अफ़सोस हुआ कि मैंने बाप से

इनकार कर दिया है। चुनाँचे वह अंगूर के बाग़ में काम करने चला गया। बाप ने दूसरे बेटे से भी बात की कि जाकर मदद कर। दूसरा बेटा ख़ुशी से मुत्तफ़िक़ हुआ लेकिन काम करने न गया।

ईसा कहना चाहता है कि सिर्फ़ यह मान लेना काफ़ी नहीं कि ख़ुदा के फ़रमान दुरुस्त हैं। लाज़िम है कि हम उसके फ़रमानों पर अमल भी करें। ईसा की तालीमात का मुतालआ करने से हम फ़रमाँबरदारी के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

- ईसा के पैरोकार बनने से आपने अपने आपको उसके हवाले कर दिया। वह आपका मालिक है जिसके ताबे आपको रहना है।

> जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। (मत्ती 16:24)

- आपने मसीह का शागिर्द बनने का फ़ैसला किया है। लेकिन यह एक फ़ैसला है जो रोज़ाना और बार बार करना पड़ता है। लाज़िम है कि आप रोज़ाना अपनी फ़रमाँबरदारी से अपनी उससे मुहब्बत का इज़हार करें।

> अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। (यूहन्ना 14:15)

- जैसे जैसे आप उसके हुक्मों की तामील करते जाएँगे— "और उसके अहकाम हमारे लिए बोझ का बाइस नहीं हैं।" (1 यूहन्ना 5:3) —वैसे वैसे ख़ुदावंद ईसा मसीह के साथ आपका ताल्लुक़ मज़बूत होता जाएगा।

> जब तुम मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मुझमें क़ायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और यों उसकी मुहब्बत में क़ायम रहता हूँ। (यूहन्ना 15:10)

- फ़रमाँबरदारी का यह फ़ायदा भी है कि आप ऐसी राह पर चलेंगे जो आपको हक़ीक़ी सुकून और इतमीनान देगी।

> तुम क्यों मुझे 'ख़ुदावंद, ख़ुदावंद' कहकर पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं करते। लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि वह शख़्स किसकी मानिंद है जो मेरे पास आकर मेरी बात सुन लेता और उस पर अमल करता है। वह उस आदमी की मानिंद है जिसने अपना मकान बनाने के लिए गहरी बुनियाद की खुदाई करवाई। खोद खोदकर वह चटान तक पहुँच गया। उसी पर उसने मकान की बुनियाद रखी। मकान मुकम्मल हुआ तो एक दिन सैलाब आया। ज़ोर से बहता हुआ पानी मकान से टकराया, लेकिन वह उसे हिला न सका क्योंकि वह मज़बूती से बनाया गया था। (लूक़ा 6:46-48)

मुझे क्या करना चाहिए?

चूँकि आपने ईसा मसीह को अपना ख़ुदावंद कहा है इसलिए लाज़िम है कि आप फ़ैसला करें कि क्या मैं उसकी फ़रमाँबरदारी करूँ या न करूँ? बपतिस्मे में आप "मरकर गुनाह की हुकूमत से निकल गए हैं और अब आपकी मसीह में ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है" (रोमियों 6:3-11), देखें ज़मीमा 1)। लेकिन शैतान आपको आज़माइश में डालकर कोशिश करेगा कि आप अल्लाह से अपने वादों से फिर जाएँ। ज़ैल के अक़दामात अज़म में मज़बूत रहने में आपकी मदद करेंगे।

- रोज़ाना अपना यह अज़म दोहराएँ कि मैं ईसा मसीह का शागिर्द हूँ।
- दुआ करने और ख़ुदा का कलाम पढ़ने से यह मालूम करें कि उसकी आपकी ज़िंदगी के लिए क्या मरज़ी है।
- हर हालत में और जब भी कोई फ़ैसला करना हो तो अपने आपसे पूछें कि क्या ईसा चाहता है कि मैं ऐसा करूँ?
- पाक-साफ़ ख़यालों और क़ौलो-फ़ेल से उसकी पूरी इताअत का इज़हार करें।

ज़रा सोचें तो

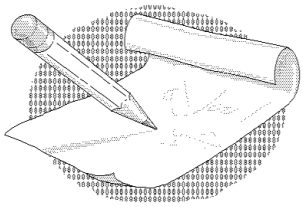

कभी कभी अल्लाह आपको बेहद मुश्किल काम करने को कहेगा। शायद वह आपसे कहे कि फ़ुलाँ को बता कि मैं ईसा मसीह का पैरोकार हूँ। या शायद वह फ़रमाए कि दोस्त की ख़ातिर झूट बोलने या धोका देने से इनकार कर। यह भी हो सकता है कि वह आपको बताए कि मेरे नाम की ख़ातिर तकलीफ़ उठाने के लिए तैयार रह। उसी वक़्त आपकी ताबेदारी की हक़ीक़त आप और इर्दगिर्द के लोगों के सामने खुल जाएगी। यह ताबेदारी आज़माने के लिए अपने आपसे ज़ैल के सवालात पूछें।

- जब मैं ईसा को "ख़ुदावंद" कहता हूँ तो मेरा क्या मतलब है?

  _____

  _____

- ख़ुदा का क्या फ़रमान मेरे लिए मुश्किल है?

  _____

  _____

- क्या मैं वाक़ई यक़ीन रखता हूँ कि अल्लाह बेहतरी पैदा करेगा? उस वक़्त भी जब उसके फ़रमान से तकालीफ़ बरदाश्त करनी पड़ें?

  _____

  _____

- कौन-सी तकलीफ़ या दुख सहना मेरे लिए मुश्किल है?

  _____

  _____

- क्यों?

  _____

- मैं किस तरह दिखा सकता हूँ कि मैं ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़रमाँबरदार पैरोकार हूँ?

याद करने की आयात

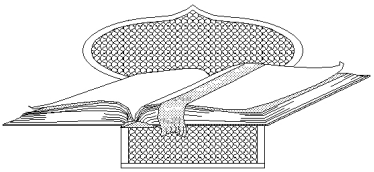

जो आयात आपने हिफ़्ज़ कर ली हैं उन्हें याद रखने का बेहतर तरीक़ा यह है कि उन सबको कम अज़ कम हफ़तावार एक बार दोहराया जाए और हर नई आयत रोज़ाना एक बार दोहराई जाए। रोज़ाना जब भी आप इबादत करें तो कुछ वक़्त उन आयात पर भी ग़ौरो-फ़िकर करें जो आपने हिफ़्ज़ की हुई हैं। ज़ैल की आयत हमें याद दिलाती है कि ख़ुदावंद ईसा मसीह ने हमारे लिए जो क़ुरबानी दी उसकी बदौलत उसे हमारी जान पर हक़ है।

> आप अपने मालिक नहीं हैं क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके ख़रीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें। (1 कुरिंथियों 6:19-20)

दुआ

अल्लाह की क़ुदरत पर ग़ौर करते वक़्त कभी कभी हमारे दिलों में ख़ौफ़ पैदा होता है। लेकिन याद रखें कि अल्लाह आपका बाप है। वह आपसे मुहब्बत करता है और आपकी बेहतरी चाहता है। बाज़ फ़रमान बहुत मुश्किल होते हैं, और हो सकता है कि हम उन पर अमल करने से डरें। ताहम इसका हल ना-फ़रमानी नहीं बल्कि यह कि हम सच्चे दिल से दुआ करें और ख़ुदा से हिम्मत और ताक़त माँगें ताकि हम बादशाह के सच्चे और पाक फ़रज़ंद साबित हों।

ज़ैल की दुआ पढ़ें और सोचें कि वह क्या कहती है। अगर आप भी यह कुछ कहना चाहें तो यह दुआ माँगें। अगर आप यह दुआ फ़िलहाल नहीं माँग सकते तो अल्लाह से अर्ज़ करें कि वह आपको हिम्मत दे और आपको फ़रमाँबरदारी के मरहले तक पहुँचाए।

ऐ प्यारे बाप! मैं अपने ख़ुदावंद और नजातदहिंदा ईसा मसीह के वसीले से पूरे तौर पर तेरी फ़रमाँबरदारी करने का अहद करता हूँ। तेरा फ़रज़ंद मेरी ज़िंदगी का नमूना हो। और हमेशा मेरी यही ख़ाहिश हो कि मैं तेरे जलाल के लिए ज़िंदगी गुज़ारूँ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह ख़ुदावंद ईसा ने दुनिया में रहकर ज़िंदगी गुज़ारी। मेरी ज़िंदगी के लिए जो तेरी मरज़ी और ख़ाहिश है वह मुझे सिखा। मुझे अपने रूहुल-क़ुद्स की क़ुदरत से मामूर कर दे ताकि मैं अपनी ज़िंदगी में तेरी मरज़ी पूरी करने की जिद्दो-जहद करूँ। ईसा के नाम में मैं यह दुआ माँगता हूँ। आमीन।

11

आज़ादी और रज़ाए-इलाही

नई ज़िंदगी क़वायदो-ज़वाबित पर अमल करने में नहीं पाई जाती बल्कि इसमें कि हम ख़ुदा और इनसान से मुहब्बत करना सीखें।

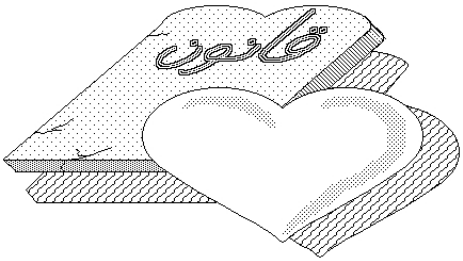

पिछले आसबाक़ में हमें गुनाह से दूर रहने, नेक आमाल करने और ईसा मसीह की पूरी इताअत करने की राह मालूम हुई। ताहम लाज़िम है कि आपकी नजात का सिर्फ़ यह नतीजा न निकले कि आप क़वायद और अच्छी आदतों की पैरवी करें। अहम बात यह है कि जो ज़िंदगी आप गुज़ारें और जो फ़ैसले आप करें वह अल्लाह और इनसान से आपकी मुहब्बत पर मबनी हों, न कि लिखी हुई शरीअत पर।

कई बार ईसा मज़हबी पेशवाओं से नाराज़ हुआ, क्योंकि उनके नज़दीक मज़हब का मक़सद यह नहीं कि हम ख़ुदा से मुहब्बत रखकर उसे ख़ुश करें बल्कि यह कि हम उसके क़वायदो-ज़वाबित पूरे करें। वह नहीं समझते थे कि दुआ ख़ुदा से रिफ़ाक़त है बल्कि यह कि दुआ एक फ़र्ज़ है जिसे मुक़र्ररा औक़ात पर अदा करनी है ताकि अल्लाह की मंज़ूरी हासिल हो। वह ग़रीबों को मुहब्बत और रहम की बिना पर ख़ैरात नहीं देते थे बल्कि

इसलिए कि अल्लाह उनकी दुआओं को क़बूल करे। वह ग़ौर नहीं करते थे कि अंदरूनी तौर पर पाक-साफ़ हो जाएँ बल्कि उनका पूरा ध्यान इस पर था कि वह पानी से बैरूनी तौर पर साफ़ रहें।

ईसा ने जो कुछ नई ज़िंदगी के बारे में कहा उस पर ग़ौर करें।

- ज़ाहिरी रुसूमात की बजा-आवरी की निसबत ज़्यादा अहम यह है कि हमें दिल की सफ़ाई हासिल हो। एक बार जब ईसा पर मज़हबी क़वानीन को तोड़ने का इलज़ाम लगाया गया तो उसने ज़ाहिरी रस्मों को कोई अहमियत न देते हुए कहा,

> कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान के मुँह में दाख़िल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है। लेकिन जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। (मत्ती 15:11,18)

- जब हम शरीअत को मुँह में लेकर किसी की मदद करने से इनकार करते या उस पर रहम नहीं करते तो हम हक़ीक़त में अल्लाह की शरीअत तोड़ते हैं। ख़ुदा ने फ़रमाया था कि सबत के दिन कोई भी काम न किया जाए। जब ईसा ने सबत के दिन लोगों को शफ़ा दी तो मज़हबी पेशवाओं ने ईसा को तंबीह की। जवाब में उसने उनसे पूछा,

> “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?” सब ख़ामोश रहे। वह ग़ुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उनकी सख़्तदिली उसके लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर उसने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया। (मरक़ुस 3:4-5)

- ईसा फ़रमाता है कि शरीअत दो बातों पर मुश्तमिल है। जो भी बात इन दो उसूलों की ख़िलाफ़वरज़ी करे वह गुनाह है।

> ‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ (मत्ती 22:37-39)

ज़रा सोचें तो

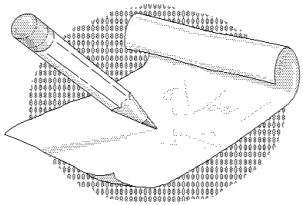

मज़हबी पेशवा उसी शरीअत का मुतालआ करते थे जो अल्लाह ने अपने नबी मूसा की मारिफ़त दी थी। ताहम यह बात उनकी समझ से बाहर थी कि शरीअत हमें राहनुमा और उस्ताद के तौर पर दी गई है ताकि हमें अल्लाह की मरज़ी मालूम हो (गलतियों 3:22-26)। शरीअत का मक़सद न सिर्फ़ यह है कि हम ज़ाहिरी तौर पर उस पर अमल करें बल्कि वह दिल साफ़ रखने और मुहब्बत के दोनों अहकाम पूरे करने में हमारी मदद भी करना चाहती है। ज़ैल की दो मिसालों पर ग़ौर करें जो ईसा ने दीं। यह मिसालें दिखाती हैं कि गुनाह दिल से निकलता है, लिहाज़ा लाज़िम है कि पाकीज़गी दिल ही से शुरू हो जाए।

- मूसा की शरीअत :

  > क़त्ल न करना। (ख़ुरूज 20:13)

  ईसा की तालीम :

  > जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई को ‘अहमक़’ कहे उसे यहूदी अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको ‘बेवुक़ूफ़!’ कहे वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक़ ठहरेगा। (मत्ती 5:22)

- मूसा की शरीअत :

  > ज़िना न करना। (ख़ुरूज 20:14)

  ईसा की तालीम :

  > जो किसी औरत को बुरी ख़ाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। (मत्ती 5:28)

- मूसा की शरीअत :

  > आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव। (ख़ुरूज 21:24)

  ईसा की तालीम :

  > बदकार का मुक़ाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दे। (मत्ती 5:39)

- मूसा की शरीअत :

  > अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। (अहबार 19:18)

  ईसा की तालीम :

  > अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। (मत्ती 5:44)

मुझे क्या करना चाहिए?

किसी ने ख़ूब कहा है कि अल्लाह से मुहब्बत रखो, फिर जी चाहे करते फिरो। इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि हमें बुराई करने की आज़ादी है बल्कि यह कि अगर हम पूरे दिल से ख़ुदा से मुहब्बत करें तो हम लाज़िमन सिर्फ़ वही काम करेंगे जो अच्छे और दुरुस्त हैं।

अल्लाह का कलाम फ़रमाता है,

> रूहुल-क़ुद्स में ज़िंदगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ितरत की ख़ाहिशात पूरी नहीं करेंगे। (गलतियों 5:16)

ज़ैल के सवालात का जवाब देकर मालूम करें कि दुआ करते वक़्त क्या मेरी नीयत अच्छी है? क्या मैं इसलिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा से रिफ़ाक़त रखूँ? या सिर्फ़ इसलिए कि अपने फ़रायज़ अदा करूँ?

- दुआ में मैं ख़ुदा से अपनी मुहब्बत का इज़हार किस तरह करूँ?

- दुआ में मैं अपने दुश्मनों से मुहब्बत का इज़हार किस तरह करूँ?

- दुआ कब अल्लाह को पसंद नहीं होती?

अब अपने दीगर आदतों और आमाल पर ग़ौर करके यही सवालात पूछें। यह करने से आप मालूम कर सकते हैं कि जो कुछ मैं करता हूँ क्या मैं उसे सही वजह से करता हूँ? क्या इसकी वजह यह है कि मैं ख़ुदा और दूसरों से मुहब्बत रखता हूँ?

याद करने की आयात

अल्लाह ने हमारे साथ ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से एक नया अहद बाँधा है। नतीजे में हम शरीअत के तहत नहीं चलते बल्कि अपनी दिली ख़ाहिशात के मुताबिक़। वजह यह है कि ख़ुदा ने हममें अपना रूह उंडेला है जो सही राह पर चलने में हमारी राहनुमाई करता है।

मैं अपनी शरीअत उनके अंदर डालकर उनके दिलों पर कंदा करूँगा। तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे। (यरमियाह 31:33)

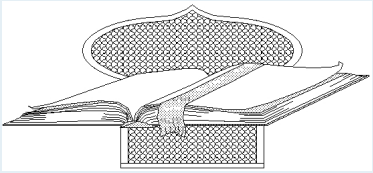

दुआ

ज़ैल की ख़ाली जगह पर अपनी दुआ लिखें। शुक्र करें कि ख़ुदा ने आपको ईसा मसीह में यह आज़ादी दी है कि आप सच्चाई और मुहब्बत से भरपूर ज़िंदगी गुज़ार सकें।

12

रोज़ा, ख़ैरात और हज

रोज़ा, ख़ैरात और हज अल्लाह की मंज़ूरी हासिल करने के ज़राए नहीं हैं बल्कि इनसे हमारी लगन ज़ाहिर होती है।

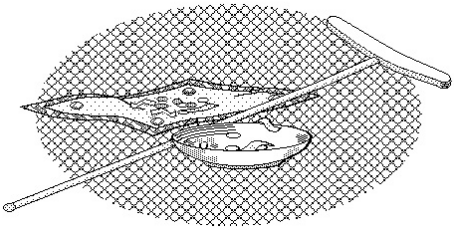

जो कुछ हम करें लाज़िम है कि उसकी जड़ अल्लाह से मुहब्बत हो। लेकिन हम इसको रोज़मर्रा की ज़िंदगी में किस तरह अमल में लाएँ? यह बात बेहतर तौर पर समझने के लिए हम पता करेंगे कि ख़ुदा अपने कलाम में रोज़ा, ख़ैरात और हज के बारे में क्या फ़रमाता है। फिर हम ग़ौर करेंगे कि यह तालीम किस तरह अमल में लाई जाए।

रोज़ा

- अल्लाह का कलाम हमें रोज़ा रखने का हुक्म नहीं देता। इसके बावुजूद ख़ुदा के रसूलों और नबियों ने उस वक़्त रोज़ा रखा जब वह अल्लाह के हुज़ूर कोई ख़ास अर्ज़ पेश करना चाहते थे। मिसाल के तौर पर जब पौलुस रसूल ने बुज़ुर्गों को जमात की राहनुमाई करने के लिए मुक़र्रर किया तो लिखा है कि

> उन्होंने रोज़े रखकर दुआ की और उन्हें उस ख़ुदावंद के सुपुर्द किया जिस पर वह ईमान लाए थे। (आमाल 14:23)

- अल्लाह का कलाम फ़रमाता है कि जो रोज़ा साफ़ दिल और ख़ालिस मक़ासिद के तहत रखा जाए सिर्फ़ वही ख़ुदा को मक़बूल है। यसायाह नबी ख़ुदा के बंदों को तंबीह करता है कि

> तुम रोज़ा रखने के साथ साथ झगड़ते और लड़ते भी हो। तुम एक दूसरे को शरारत के मुक्के मारने से भी नहीं चूकते। यह कैसी बात है? अगर तुम यों रोज़ा रखो तो इसकी तवक़्क़ो नहीं कर सकते कि तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। (यसायाह 58:4)

ईसा अपने शागिर्दों को सिखाता है कि

> रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। फिर लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़े से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा। (मत्ती 6:17-18)

ख़ैरात

- क्या ख़ैरात देना ज़रूरी है? मसीह के बहुत-से पैरोकार मूसवी शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा देते हैं। ताहम नया अहदनामा इस पर ज़ोर देता है कि अहम बात यह नहीं कि हम बहुत ज़्यादा दें, अहम बात यह है कि हमारी नीयत अच्छी हो। जो कुछ हमारे पास है वह हक़ीक़त में ख़ुदा का है। लिहाज़ा लाज़िम है कि जो कुछ हमारे पास है उससे हम ख़ुदा को जलाल दें।

> ईसा ने नज़र उठाकर देखा कि अमीर लोग अपने हदिये बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स में डाल रहे हैं। एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली से सिक्के डाल दिए। ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम

> लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। क्योंकि इन सबने तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि इसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।" (लूक़ा 21:1-4)

पौलुस रसूल ने हिदायत की कि

> हर एक उतना दे जितना देने के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा लिया है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो ख़ुशी से देता है। (1 कुरिंथियों 9: 7)

हज

- ख़ुदावंद ईसा मसीह ने कभी नहीं कहा कि हम कोई ख़ास हज करें। इसके बरअक्स वह फ़रमाता है कि मेरे पैरोकार ज़िंदगी के आख़िर तक रूहानी हज पर होते हैं। हमें हिदायत की गई है कि

> जब तक आप इस दुनिया के मेहमान रहेंगे ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारें। (1 पतरस 1:17)

- सच्चे हाजी की हैसियत से हमें पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारनी है ताकि हमारी निगाह उस मनज़िले-मक़सूद पर लगी रहे जब हम अबदी तौर पर मसीह के साथ रहेंगे (जन्नत की उम्मीद के मुताल्लिक़ देखिए सबक़ 13)।

> चुनाँचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इंतज़ार में हैं इसलिए पूरी लगन के साथ कोशाँ रहें कि आप अल्लाह के नज़दीक बेदाग़ और बेइलज़ाम ठहरें और आपकी उसके साथ सुलह हो। (2 पतरस 3:14)

मुझे क्या करना चाहिए?

- अल्लाह से दुआ करें कि वह आपको दिखाए कि आप नई ज़िंदगी के यह पहलू कैसे अमल में लाएँ।

- रोज़ाना एक फ़रमाँबरदार और पाक हाजी की हैसियत से तमाम मामलात ख़ुदा के सुपुर्द करें। जहाँ भी मुमकिन हो ख़ुदा से अपनी मुहब्बत का इज़हार करें।

- अपने आपसे पूछें कि रोज़े, ख़ैरात और हज के सिलसिले में क्या मेरा चाल-चलन क़ाबिले-तारीफ़ रहा है? क्या मैं अपने पैसों से ख़ानदान की निगहदाश्त और दूसरों की मदद कर रहा हूँ? क्या कोई ऐसी ज़रूरत है जिसके पेशे-नज़र मुझे रोज़ा रखकर दुआ करना चाहिए? क्या मेरी गुफ़्तार से पाकीज़गी की राह पर चलने की ख़ाहिश ज़ाहिर होती है?

- जो कुछ आप करें चाहे रोज़ा रखें चाहे ग़रीबों को ख़ैरात दें सब कुछ दिल की ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी से करें।

ज़रा सोचें तो

ज़ैल के सवालात के जवाब दें ताकि आपको पता चले कि आप दर्जे-बाला तालीम को किस तरह अमल में लाकर ख़ुदा को ख़ुशी दिला सकें।

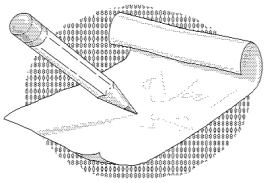

- आपको क्यों रोज़ा रखना और दुआ करना चाहिए?

_____

_____

- आप हर हफ़्ते को ग़रीबों की मदद के लिए कितने पैसे बचाकर रखने के लिए तैयार हैं?

_____

_____

- आपकी ज़िंदगी में कौन-से काम या आमाल दिखाते हैं कि आप जन्नत की तरफ़ जानेवाले रूहानी हज पर हैं?

_____

_____

- अगर हम यह काम अपनी मरज़ी और ख़ुशी से नहीं करेंगे तो ख़ुदा ख़ुश नहीं होगा। अल्लाह क्यों चाहता है कि हम ख़ुशी से ख़ैरात दें?

_____

_____

याद करने की आयात

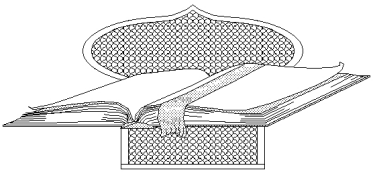

जो कुछ भी करें अल्लाह को ज़्यादा फ़िकर है कि हमारी नीयत अच्छी हो। ज़ैल की आयत पर ग़ौर करें और इसे हिफ़्ज़ कर लें ताकि जो भी आप करें उसके पीछे यह ख़याल हो कि आपकी हरकत ख़ुदा को पसंद हो।

> और जो कुछ भी आप करें ख़ाह ज़बानी हो या अमली वह ख़ुदावंद ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र करें। (कुलुस्सियों 3:17)

दुआ

ज़ैल की दुआ को मुकम्मल करें और फिर उसे सच्चे दिल से ईसा के नाम में माँगें।

ऐ ख़ुदा बाप! मैं अपनी ज़िंदगी तेरे सुपुर्द करता हूँ, क्योंकि मैं तेरी आसमानी बादशाही की तरफ़ सफ़र करनेवाला पाक हाजी हूँ। मैं रोज़ा और दुआ के अलावा ज़ैल के तरीक़ों से अपनी तुझसे मुहब्बत ज़ाहिर करना चाहता हूँ।

13

दुख और हमारी ज़िंदा उम्मीद

अल्लाह की मरज़ी है कि हम उस पर भरोसा रखते हुए दुख सहें और पूरी उम्मीद के साथ दूसरी दुनिया का इंतज़ार करें।

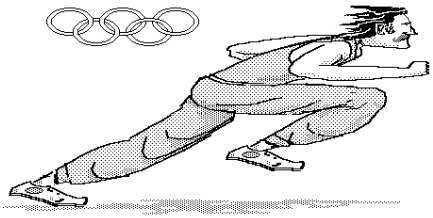

क्या आपने कभी उस पहलवान को देखा है जो ओलिंपिक खेलों में हिस्सा लेने के लिए तरबियत लेता है? अपने जिस्म को तैयार करने के लिए वह सख़्त वरज़िश करता और बहुत तकलीफ़ सहता है। वह ऐसी तकलीफ़ क्यों सहता है? वह तकलीफ़ इसलिए सहता है कि उसकी नज़र मनज़िले-मक़सूद पर लगी रहती है। वह इनाम जीतना चाहता है। इसी तरह कलामे-पाक हमें सिखाता है कि जो ईसा मसीह की पैरवी करने के लिए चुने गए हैं उन्हें तकलीफ़ और दुख सहना पड़ता है। लेकिन जिस तरह पहलवान इनाम पर नज़र रखते हुए क़ुव्वत हासिल करता है उसी तरह ख़ुदा ने हमें वह ज़िंदा उम्मीद बख़्शी है जो इस ज़िंदगी में दुख सहने की क़ुव्वत अता करती है।

ज़ैल की आयात हमें इस उम्मीद के बारे में अल्लाह का वादा देती हैं,

(3) ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उसने ईसा मसीह को ज़िंदा करने के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा किया है। इससे हमें एक ज़िंदा उम्मीद मिली है, (4) एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं सड़ेगी, कभी नहीं नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्योंकि यह आसमान पर आपके लिए महफ़ूज़ रखी गई है। (5) और अल्लाह आपके ईमान के ज़रीए अपनी क़ुदरत से आपकी उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा जब तक आपको नजात न मिल जाए, वह नजात जो आख़िरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तैयार है।

(6) उस वक़्त आप ख़ुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आपको थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आज़माइशों का सामना करके ग़म खाना पड़ता है (7) ताकि आपका ईमान असली साबित हो जाए। क्योंकि जिस तरह आग सोने को आज़माकर ख़ालिस बना देती है उसी तरह आपका ईमान भी आज़माया जा रहा है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज़्यादा क़ीमती है। क्योंकि अल्लाह चाहता है कि आपको उस दिन तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा मसीह ज़ाहिर होगा। (8) उसी को आप प्यार करते हैं अगरचे आपने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप ईमान रखते हैं गो वह आपको इस वक़्त नज़र नहीं आता। हाँ, आप दिल में नाक़ाबिले-बयान और जलाली ख़ुशी मनाएँगे, (9) जब आप वह कुछ पाएँगे जो ईमान की मनज़िले-मक़सूद है यानी अपनी जानों की नजात। (2 पतरस 1:3-9)

- **छटी आयत** हमें यक़ीन दिलाती है कि ईसा मसीह के पैरोकार के लिए दुख कोई ग़ैरमामूली बात नहीं।

- **सातवीं आयत** हमें बताती है कि दुख का एक मक़सद यह है कि हमारे ईमान को तक़वियत मिले। दुख भी हमारी भलाई का बाइस बनता है।

- जो मनज़िले-मक़सूद हमें दुख क़बूल करने की ताक़त बख़्शती है वह भी इस हवाले में बयान की जाती है।

  आयत 3: ईसा मसीह के जी उठने से हमें अबदी ज़िंदगी की ज़िंदा उम्मीद मिलती है।

  आयत 4: आसमान पर हमारे लिए लाज़वाल मीरास महफ़ूज़ रखा गया है।

आयत 7: हमारे ईमान को तक़वियत मिलती है। नतीजे में क़ियामत के दिन हमें तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिलेगी।

आयत 9: गुनाह से नजात मिलने से हमें इस दुनिया में रहते हुए एक बामानी और बा-मक़सद ज़िंदगी मिली है।

- अल्लाह का कलाम मुकाशफ़ा की किताब में हमें आसमान की शानो-शौकत बयान करता है। दुनिया में लोग अपनी नफ़सानी ख़ाहिश पूरी करते हैं, लेकिन आसमान फ़रक़ होगा। वहाँ सब कुछ पाक और मुक़द्दस होगा।

> मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा और लेला ही उसका मक़दिस हैं। शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का जलाल उसे रौशन कर देता है और लेला उसका चराग़ है। कोई नापाक चीज़ उसमें दाख़िल नहीं होगी, न वह जो घिनौनी हरकतें करता और झूट बोलता है। सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिनके नाम लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं। (मुकाशफ़ा 21:22-23,27)

- आसमान सुकून और ख़ुशी से भरी जगह भी है, क्योंकि हक़ीक़ी ख़ुशी सिर्फ़ अल्लाह के हुज़ूर मिल सकती है।

> अब अल्लाह की सुकूनतगाह इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत करेगा और वह उसकी क़ौम होंगे। अल्लाह ख़ुद उनका ख़ुदा होगा। वह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न मातम, न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह जाता रहा है। (मुकाशफ़ा 21:3-4)

मुझे क्या करना चाहिए?

- यक़ीन रखें कि अल्लाह आपके दुख से आपके लिए भलाई पैदा करेगा।
- दुख पर पूरा ध्यान देने के बजाए उस ज़िंदा उम्मीद पर ग़ौर करें जो ख़ुदावंद ईसा मसीह ने आपके लिए आसमान पर तैयार कर रखी है।

- ज़रूर दुआ करें कि आप दुखों से नजात पाएँ। लेकिन साथ साथ ख़ुदा की हम्द भी करें। उन वादों के लिए अल्लाह का शुक्र करते रहें जो हमें दुख सहने के क़ाबिल बनाते हैं।

- दरजे-बाला आयात किसी दिलशिकस्ता ईमानदार को पेश करें ताकि उसकी हौसलाअफ़ज़ाई की जाए।

ज़रा सोचें तो

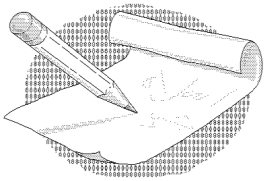

ज़ैल के सवालात के जवाब दें :

- आप क्यों समझते हैं कि आसमान एक मुक़द्दस जगह है?

_____

_____

- आपका जो ईसाई भाई या बहन इस वक़्त तकलीफ़ में है उसकी आप किस तरह हौसलाअफ़ज़ाई करके मदद करेंगे?

_____

_____

- जब हम आसमान की लाज़वाल मीरास पर अपना सारा ध्यान मरकूज़ करें तो इससे हमारा दुनियावी दौलत के बारे में ख़याल किस तरह मुतअस्सिर हो जाएगा?

_____

_____

- वह कौन-सा दुख है जो आपके लिए सहना मुश्किल है? (मसलन दोस्तों की ठट्ठाबाज़ी, नौकरी न मिलना वग़ैरा।)

_____

- आप दुख सहते वक़्त किस तरह ख़ुशी मना सकते हैं?

याद करने की आयात

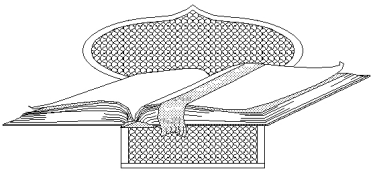

हमारी उम्मीद उस ख़ुदा के वादे पर मबनी है जो कभी भी धोका नहीं देता। उसकी ख़ाहिश यह है कि हम हमेशा तक उसके साथ ख़ुशी की ज़िंदगी गुज़ारें। ज़ैल की आयत हिफ़्ज़ करें और फिर लफ़्ज़ "हम" की जगह अपना नाम डालकर उसे दोहराएँ।

> लेकिन हम उन नए आसमानों और नई ज़मीन के इंतज़ार में हैं जिसका वादा अल्लाह ने किया है। और वहाँ रास्ती सुकूनत करेगी। (2 पतरस 3:13)

दुआ

ऐ क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा! तेरे वादे कितने अज़ीम हैं! गो मैं तेरा नौकर होने के भी लायक़ नहीं, ताहम तूने मुझे अपना फ़रज़ंद बनाकर लाज़वाल मीरास अता की है। मेरी नज़र उस ज़िंदा उम्मीद पर जमा दे ताकि मेरा ईमान दुखों और तकलीफ़ों का सामना करते वक़्त डगमगाने न लगे। मेरी मदद कर ताकि मैं वह कुछ भूल न जाऊँ जो तूने मुझे अता किया है ताकि मैं तकलीफ़ सहते वक़्त भी ईसा के नाम में ख़ुशी मनाता रहूँ।

14

ज़मीमा 1: ईसा मसीह का पैरोकार बनने का रास्ता

अपने फ़रज़ंद ईसा के वसीले से अल्लाह ने तमाम इनसान के लिए नजात का रास्ता फ़राहम कर दिया है ताकि

> जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए।
> (यूहन्ना 3:16)

ख़ुदा का मुक़द्दस कलाम वाज़िह तौर पर बताता है कि कोई भी इनसान यह अबदी नेमत हासिल कर सकता है। किस तरह?

तसलीम करें कि आप गुनाहगार हैं।

> सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा करता है (रोमियों 3:23)

अपने गुनाहों से तौबा करें।

> अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आपके गुनाहों को मिटाया जाए। फिर आपको रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आपके लिए मुक़र्रर किया गया है। (आमाल 3:19)

यक़ीन रखें कि ईसा नजात का वाहिद रास्ता है।

> क्योंकि मैंने इस पर ख़ास ज़ोर दिया कि वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक नविश्तों के मुताबिक़ हमारे गुनाहों की ख़ातिर अपनी जान दी, फिर वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविश्तों के मुताबिक़ जी उठा। (1 कुरिंथियों 15:3-4)

उस पर ईमान लाएँ जो नजात का वाहिद रास्ता है।

> ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।” (यूहन्ना 14:6)

> उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।” (आमाल 16:31)

ग़रज़, पहला क़दम यह है कि आप नजात की यह ख़ुशख़बरी क़बूल करके अपने गुनाहों से पछताकर तौबा करें और ईसा मसीह के पैरोकार बनने की ख़ाहिश रखें। दूसरा क़दम यह है कि इस अज़्म को बपतिस्मे से ज़ाहिर करें। बपतिस्मा नजात का एक ख़ास निशान है जो हमें ख़ुदा की तरफ़ से अता किया गया है। इससे हम ज़ाहिर करते हैं कि हम गुनाह की ज़िंदगी छोड़कर ईसा मसीह में नई ज़िंदगी में दाख़िल हुए हैं। इससे हम यह भी ज़ाहिर करते हैं कि हम गुनाह से आज़ाद होकर उस रिश्ते की ख़ुशी मनाना चाहते हैं जो मसीह में और रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अल्लाह के साथ क़ायम हुआ है।

> क्योंकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उसकी मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने मुरदों में से ज़िंदा किया। (रोमियों 6:4)

क्या दुनिया की कोई और बात है जो नजात की इस पेशकश से अहम है? हरगिज़ नहीं! अब आपको फ़ैसला करना है कि क्या आप इस मुफ़्त नेमत को क़बूल करेंगे कि नहीं? अगर आपको नजात या बपतिस्मे के बारे में कोई सवाल हो तो हमसे राबता फ़रमाएँ।

15

ज़मीमा 2: मसीही और मसिहियत

ग़लतफ़हमी से बचने की ख़ातिर “मसीही” और “मसिहियत” के अलफ़ाज़ से गुरेज़ किया गया है। इसके बजाए “मसीह का पैरोकार” या “ईमानदार” जैसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं इस पर ज़ोर देने के लिए कि ईमान और नजात दिल ही के मामलात हैं।

लफ़्ज़ “मसीही” पाक सहायफ़ में पाया जाता है। इससे मुराद वह शख़्स है जो मसीह का है। लेकिन आजकल यह लफ़्ज़ न सिर्फ़ उनको बयान करने के लिए इस्तेमाल होता है जो हक़ीक़तन ईसा मसीह के पैरोकार हैं बल्कि बहुत दफ़ा यह लफ़्ज़ किसी की मुआशरती हैसियत बयान करता है। बहुत-से लोग इसलिए मसीही कहलाते हैं कि वह नाम-निहाद मसीही ख़ानदान या जमात से ताल्लुक़ रखते हैं गो वह मसीह के हक़ीक़ी पैरोकार नहीं हैं। न उन्होंने तौबा की है, न मसीह में नई ज़िंदगी पाई है। लिहाज़ा ग़लतफ़हमियों की वजह से शायद बेहतर यह है कि सच्चा ईमानदार यह लफ़्ज़ इस्तेमाल न करे। बेशक कलामे-मुक़द्दस के यह अलफ़ाज़ भी दुरुस्त हैं कि

> अगर आपको मसीह के पैरोकार होने की वजह से दुख उठाना पड़े तो न शरमाएँ बल्कि मसीह के नाम में अल्लाह की हम्दो-सना करें।
> (1 पतरस 4:16)

लफ़्ज़ “मसिहियत” आम तौर पर मसीही मज़हब का नाम है। यह लफ़्ज़ उस जमात की तरफ़ इशारा है जो मसीही कहलाती है। लेकिन याद रहे कि हमारी रूहानी ज़िंदगी

और हिफ़ाज़त किसी मसीही जमात पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह से ताल्लुक़ पर।

> और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। (यूहन्ना 17:3)